कोटद्वार, शनिवार
11 मई 2024
वर्ष: 46
अंक: 21 पृष्ठ: 4
मूल्य: 2.00
RNI-35469/79

जयन्त

निर्भीक – निष्पक्ष – जनसरोकार

www.dainikjayantnews.com
स्थापित 1979
संस्थापक : स्व. नरेन्द्र उनियाल

डाक पंजीयन पी.ए.ओ.07-2024-26 फोन: 9412081969 email: nagendra.uniyal@gmail.com

एक नजर

खड़े मिनी ट्रक से टकराई अनियंत्रित कार, तीन दोस्तों की दर्दनाक मौत

भागलपुर। बिहार के भागलपुर जिले में एक बार फिर तेज रफ्तार का कहर देखने को मिला है, जहां पर तेज रफ्तार कार ने खड़ी मिनी ट्रक में पीछे से जोरदार टक्कर मार दी। इस हादसे में कार सवार तीन युवकों की मौके पर ही मौत हो गई है। वहीं, घटना के बाद मृतकों के परिजनों का रो–रोकर बुरा हाल है।

अनियंत्रित कार मिनी ट्रक से टकराई

जानकारी के मुताबिक, हादसा नवगछिया पुलिस जिला के गोपालपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत मकंदपुर चौंक के समीप का है। मृतकों की पहचान रंगरा थाना क्षेत्र के भवानीपुर निवासी सनोज यादव, कैप्टन यादव और खगड़िया जिला निवासी प्रभाकर यादव के रूप में हुई है। घटना के संबंध में बताया जा रहा है कि तीनों दोस्त अहले सुबह कार से पूर्णिया से आ रहे थे तभी गोपालपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत मकंदपुर चौंक के समीप तेज रफ्तार कार ने सड़क किनारे खड़ी मिनी ट्रक में पीछे से जोरदार टक्कर मार दी, जिसमें कार सवार तीनों दोस्तों की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं, स्थानीय लोगों के द्वारा घटना की सूचना गोपालपुर थाना को दी गई।

जांच में जुटी पुलिस

इधर, घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और दोनों गाड़ियों को अपने कब्जे में लेकर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि घटना के वक्त एक तेज आवाज हुआ उन्हें लगा कि किसी ट्रक का टायर ब्लास्ट किया है, लेकिन जब नजदीक जाकर देखा तो एक कार ने मिनी ट्रक में टक्कर मार दीस जिसमें तीन लोगों की मौत हो गई है। वहीं, इस हादसे के बाद मृतकों के परिजनों का रो–रोकर बुरा हाल है।

नरेंद्र दाभोलकर हत्याकांड में 2 को उम्रकैद, 3 आरोपी बरी

मुम्बई । महाराष्ट्र के पुणे में गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम (यूएपीए) से जुड़े मामलों की विशेष अदालत ने अंधविश्वास के खिलाफ लड़ाई लड़ने वाले कार्यकर्ता डॉ। नरेंद्र दाभोलकर की हत्या के मामले में शुक्रवार को दो लोगों को दोषी ठहराते हुए उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई और मुख्य आरोपी वीरेंद्र सिंह तावड़े सहित तीन को बरी कर दिया। पुणे के ओंकारेश्वर ब्रिज पर सुबह की सैर पर निकले दाभोलकर (67) की 20 अगस्त 2013 को गोली मारकर हत्या कर दी गई थी।लोगों से खचाखच भरे अदालत कक्ष में आदेश को पढ़ते हुए अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश (विशेष न्यायालय) पी।पी। जाधव ने कहा कि अभियोजन पक्ष ने सचिन अंदुरे और शरद कालस्कर के खिलाफ हत्या तथा साजिश के आरोप साबित कर दिए हैं और उन्हें आजीवन कारावास तथा 5 लाख रुपये के जुर्माने की सजा सुनाई गई। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) के मुताबिक अंदुरे और कालस्कर ने दाभोलकर पर गोली चलाई थी।अदालत ने सबूतों के अभाव में आरोपी कान–नाक–गला (ईएनटी) रोग सर्जन तावड़े, संजीव पुनालेकर और विक्रम भावे को बरी कर दिया। मुकदमे के दौरान अभियोजन पक्ष ने 20 गवाहों जबकि बचाव पक्ष ने दो गवाहों से सवाल–जवाब किए। अभियोजन पक्ष ने अपनी अंतिम दलीलों में कहा था कि आरोपी अंधविश्वास के खिलाफ दाभोलकर के अभियान के विरोध में थे। शुरुआत में इस मामले की जांच पुणे पुलिस कर रही थी, लेकिन बंबई उच्च न्यायालय के आदेश के बाद 2014 में सीबीआई ने मामले को अपने हाथ में ले लिया और जून 2016 में हिंदू दक्षिणपंथी संगठन सनातन संस्था से जुड़े ईएनटी सर्जन तावड़े को गिरफ्तार कर लिया। अभियोजन पक्ष के अनुसार तावड़े हत्या के मुख्य साजिशकर्ताओं में से एक थे।

ईरान के कब्जे वाले जहाज से पांच भारतीय रिहा

नई दिल्ली। ईरान द्वारा जब्त किए गए इस्राइल से जुड़े मालवाहक जहाज पर सवार 11 में से पांच भारतीय नाविकों को रिहा कर दिया गया है।ईरान ने 13 अप्रैल को जब्त किए मालवाहक जहाज एमएससी एरीज पर सवार पांच भारतीयों को गुरुवार को रिहा कर दिया है। ईरान में मौजूद भारतीय दूतावास ने बताया है कि ये सभी लोग भारत के लिए रवाना हो गए हैं।

विधि-विधान से खुले ग्यारहवें ज्योर्तिलिंग श्री केदारनाथ धाम के कपाट

● प्रदेश के मुख्यमंत्री सहित गणमान्य एवं देश-विदेश से आए हजारों श्रद्धालु बने कपाट खुलने के साक्षी

जयन्त प्रतिनिधि।

रूद्रप्रयाग : श्री केदारनाथ धाम के कपाट शुक्रवार को पूरे विधि-विधान के साथ खोल दिए गए। अगले छह माह तक बाबा केदार अपने धाम से श्रद्धालुओं को दर्शन देंगे। मंदिर के जगद्गुरु रावल भीम शंकर लिंग शिवाचार्य, मुख्य पुजारी शिव शंकर लिंग, मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी, धर्म पत्नी गीता धामी, श्री बदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति (बीकेटीसी) अध्यक्ष अजेंद्र अजय, मुख्य कार्याधिकारी योगेंद्र सिंह पुजारी, धर्माचार्य वेदपाठी, केदार सभा के पदाधिकारी तथा जिलाधिकारी डा. सौरभ गहरवार प्रशासन की मौजूदगी में रावल धर्माचार्य एवं पुजारी गणों ने द्वार पूजा, भगवान भैरवनाथ तथा भगवान शिव का आह्वान कर ठीक सुबह सात बजे श्री केदारनाथ मंदिर के कपाट खोले गए। कपाट खुलने के बाद भगवान केदारनाथ के स्वयंभू शिवलिंग को समाधि रूप से श्रृंगार रूप दिया गया। उसके पश्चात् श्रद्धालुओं ने दर्शन शुरू किए। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने प्रदेश एवं देश की खुशहाली के लिए विशेष पूजा करने के साथ बाबा केदारनाथ का रुद्राभिषेक किया। इसके बाद उन्होंने नंदी महाराज को वस्त्र पहनाकर पूजा-अर्चना कर दर्शन के लिए पहुंचे श्रद्धालुओं से भेंट कर अभिवादन किया। विश्वप्रसिद्ध ग्यारहवें ज्योर्तिलिंग श्री केदारनाथ धाम के कपाट जय बाबा केदारनाथ के उद्घोष तथा सेना के ग्रेनेडियर रेजीमेंट की बैंड की भक्तिमय धुनों के बीच हजारों श्रद्धालु कपाट खुलने के गवाह बने। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने मुख्य सेवक दल भंडारा कार्यक्रम समिति द्वारा आयोजित भंडारा एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों में शिरकत करते हुए कहा कि आज बहुत शुभ दिन है आज से विधिवत चार धाम यात्रा का शुभारंभ हो गया है। देश-विदेश से श्रद्धालु बाबा केदारनाथ के दर्शन के लिए इस अवसर पर पहुंचे हैं। उन्होंने कहा कि सभी की यात्रा मंगलमय हो और जिस उद्देश्य से श्रद्धालु यात्रा पर आए हैं उनकी मनोकामना बाबा केदारनाथ पूरी करें। उन्होंने कहा कि देश-दुनिया से आ रहे श्रद्धालुओं की यात्रा सुगम, सुव्यवस्थित एवं सरल ढंग से संपादित हो इसके लिए शासन-प्रशासन, पुलिस एवं सुरक्षा बल, तीर्थ पुरोहितों, मंदिर समिति, स्थानीय व्यापरियों, स्वच्छता कर्मचारियों सहित यात्रा से जुड़े हर व्यक्ति का सहयोग जरूरी है। श्रद्धालुओं को कोई परेशानी न हो इसके लिए लगातार सभी स्तर से प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि 2013 की आपदा में हुए नुकसान की भरपाई करने एवं नव निर्माण-पुनर्निर्माण के लिए शासन-प्रशासन द्वारा क्रमबद्ध रूप से लगातार कार्य किए जा रहे हैं, आशा है कि 2024 तक सभी कार्य समय से पूर्ण हो जाएंगे और यात्रा और सुगम होगी। इस अवसर पर हक-हकूकधारी, संस्कृति एवं कला परिषद के उपाध्यक्ष मधु भट्ट, मंदिर समिति सदस्य श्रीनिवास पोस्ती, वीरेंद्र असवाल, कार्याधिकारी आरसी तिवारी, धर्माचार्य औकार शुक्ला, वेदपाठी यशोधर मैठाणी, विश्वमोहन जमलोकी स्वयंबर सेमवाल, प्रदीप सेमवाल, अरविंद शुक्ला, कुलदीप धर्मवाण, देवानंद गैरोला आदि सहित जिला पंचायत अध्यक्ष अमरदेई शाह, आईजी गढ़वाल करण सिंह, पुलिस अधीक्षक विशाखा अशोक भदाणे, उप जिलाधिकारी ऊखीमठ अनिल शुक्ला, जखोली भगत फोनिया सहित हजारों की संख्या में देश-विदेश से पहुंचे श्रद्धालु मौजूद रहे।

तीर्थयात्रियों पर हैलीकाप्टर से की पुष्पवर्षा

इस दौरान मंदिर को 25 क्विंटल से अधिक फूलों से सजाया गया था। साथ ही कपाट खुलते समय तीर्थयात्रियों पर आकाश से हैलीकाप्टर द्वारा फूलवर्षा हुई। तथा श्रद्धालुओं के लिए जगह–जगह भंडारे आयोजित किए गए थे। मुख्य सेवक भंडारा कार्यक्रम समिति ने भी भंडारे आयोजित किए। कपाट खुलने के अवसर पर बीकेटीसी अध्यक्ष अजेंद्र अजय ने शुभकामनाएं देते हुए कहा कि बीते यात्राकाल में रिकॉर्ड तीर्थ यात्री श्री केदारनाथ धाम पहुंचे इस वर्ष भी श्रद्धालुओं की संख्या में वृद्धि होगी जिसके लिए मुख्यमंत्री पुष्कर सिह धामी के नेतृत्व में प्रदेश सरकार तथा मंदिर समिति यात्री सुविधाओं हेतु प्रतिबद्ध है। बीकेटीसी मीडिया प्रभारी डा. हरीश गौड़ ने बताया गया कि कल शनिवार 11 मई को श्री केदारनाथ धाम में श्री भकुंट भैरव मंदिर के द्वार खुलने के साथ श्री केदारनाथ मंदिर में नित्य प्रति आरतियां एवं संध्याकालीन आरतियां शुरू हो जाएंगी।

जब तक जीवित हूं, आरक्षण धर्म के आधार पर नहीं देने दूंगा', महाराष्ट्र में बोले पीएम मोदी

मुम्बई । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज महाराष्ट्र के दौरे पर हैं। उन्होंने नंदुरबार में एक विशाल रैली को संबोधित किया। इस दौरान पीएम मोदी ने कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा। प्रधानमंत्री ने कहा कि कर्नाटक में कांग्रेस सरकार ने सभी मुसलमानों को ओबीसी श्रेणी में रातों रात शामिल कर उन्हें आरक्षण दिया। पीएम ने कहा, "कांग्रेस आरक्षण और संविधान के संबंध में झूठ फैला रही है, धर्म आधारित आरक्षण डॉ। बाबासाहेब आंबेडकर के खिलाफ है।" पीएम ने कहा, "जब तक मैं जीवित हूं, मैं दलितों, आदिवासियों, ओबीसी का आरक्षण धर्म के आधार पर मुसलमानों को नहीं देने दूंगा।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने महाराष्ट्र के नंदुरबार में चुनावी रैली के दौरान कहा, "एक तरफ कांग्रेस है जो कहती है 'मोदी तेरी कब्र खुदेगी' और दूसरी तरफ ये नकली शिवसेना है जो मुझे जिंदा गाड़ने की बात करती है। मुझे गाली देते हुए भी ये तुष्टीकरण का पूरा ध्यान रखते हैं। अब तो ये नकली शिवसेना वाले बम धमाके के दोषी को भी अपने साथ प्रचार में ले जा रहे हैं। बिहार में चारा चोरी में जेल की सज़ा काटने वाले व्यक्ति को कंधे पर बैठाकर घूम रहे हैं, महाराष्ट्र में बम धमाके के दोषी को कंधे पर बैठाकर घूम रहे हैं।"

नकली शिवसेना वाले मुझे जिंदा गाड़ने की बात कर रहे

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, "ये लोग इतने अहंकार से भरे हुए हैं कि गरीब इनके लिए कोई मायने नहीं रखता।

वोटिंग के 48 घंटे के भीतर मतदान डेटा जारी किया जाए

नई दिल्ली। एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर करके चुनाव आयोग को लोकसभा चुनाव के प्रत्येक चरण की वोटिंग के बाद 48 घंटे के भीतर अपनी वेबसाइट पर मतदान केंद्र–वार पूरा डेटा अपलोड करने का निर्देश देने की मांग की है।

एडीआर ने अपनी साल 2019 की जनहित याचिका में एक अंतरिम आवेदन दायर किया है जिसमें चुनाव आयोग के पैनल को निर्देश देने की मांग की गई है कि सभी मतदान केंद्रों के फॉर्म 173 भाग– क के रिकॉर्ड किए गए वोटों की प्रतियां फौरन अपलोड की जाएं। एडीआर ने कहा, "चुनाव आयोग को 2024 के लोकसभा चुनावों में प्रत्येक चरण की वोटिंग के बाद फॉर्म 173 भाग– क में दर्ज किए गए वोटों की संख्या के पूर्ण आंकड़ों में सारणीबद्ध मतदान केंद्र–वार डेटा और निर्वाचन क्षेत्र का सारणीबद्ध डेटा प्रदान करने का निर्देश दें।"

अरविंद केजरीवाल को जमानत मिली

नई दिल्ली। दिल्ली आबकारी नीति घोटाले में मनी लॉन्ड्रिंग के आरोप में जेल में बंद आम आदमी पार्टी के संयोजक और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल सुप्रीम कोर्ट से 22 दिनों के लिए अंतरिम जमानत मिल गई है। हालांकि, जमानत के दौरान केजरीवाल न तो मुख्यमंत्री दफ्तर जाएंगे और न ही फाइलों पर हस्ताक्षर करेंगे।

सीएम केजरीवाल को इन शर्तों पर मिली अंतरिम जमानत

सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के विरोध को दरकिनार करते हुए अरविंद केजरीवाल को लोकसभा चुनाव में प्रचार के लिए एक जून तक सशर्त अंतरिम जमानत दे दी है। केजरीवाल को दो जून को फिर सरेन्डर करना होगा। सुप्रीम कोर्ट ने केजरीवाल को जमानत देते

हुए जो शर्तें लगाई हैं उनमें कहा है कि जमानत के दौरान केजरीवाल मुख्यमंत्री दफ्तर और सचिवालय नहीं जाएंगे। केस में अपनी भूमिका के बारे में कोई टिप्पणी नहीं करेंगे और न ही इस केस से जुड़ी ऑफिशियल फाइलों को देखेंगे। वह गवाहों से संपर्क नहीं करेंगे।

इस मामले में उपराज्यपाल से लेनी होगी मंजूरी

कोर्ट ने यह भी कहा है कि केजरीवाल उनकी ओर से कोर्ट में दिये गए इस बयान से बंधे होंगे कि वह जमानत के दौरान किसी ऑफिशियल फाइल पर तब तक हस्ताक्षर नहीं करेंगे, जब तक कि किसी मामले में दिल्ली के उपराज्यपाल से मंजूरी लेने के लिए ऐसा करना जरूरी न हो।

कोर्ट ने क्या कहा?

न्यायमूर्ति संजीव खन्ना और दीपांकर दत्ता की पीठ ने अरविंद केजरीवाल को मनी लॉन्ड्रिंग के मामले में एक जून तक अंतरिम जमानत पर रिहा करने का आदेश देते हुए कहा कि केजरीवाल जेल अधीक्षक की संतुष्टि का पचास हजार का निजी मुचलका भरेंगे और इतनी ही राशि का एक जमानती देंगे।

संपादकीय

केजरीवाल की रिहाई

लोकसभा चुनाव के दौर में अब एक ऐसा नया मोड़ आ गया है जो निश्चित तौर पर आने वाले चुनाव परिणाम पर एक बड़ा असर डालेगा। शराब घोटाले को लेकर 21 मार्च से जेल में बंद आम आदमी पार्टी के संयोजक एवं दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को 1 जून तक के लिए अंतरिम जमानत दे दी गई है। खास बात यह है कि इस अंतरिम जमानत में उन पर चुनाव प्रचार को लेकर किसी प्रकार की कोई बंदिश नहीं लगाई गई है, हालांकि कैसे से संबंधित कुछ शर्तें शामिल की गई है। अरविंद केजरीवाल की रिहाई को लेकर आम आदमी पार्टी और इंडिया गठबंधन इस प्रकार से उत्साहित है कि आम आदमी पार्टी ने अपने शुक्रवार के सभी चुनाव प्रचार कार्यक्रमों को रद्द कर दिया। अरविंद केजरीवाल की रिहाई चुनाव परिणाम पर एक बड़ा असर डालने वाली है और वह अपनी गिरफ्तारी को पूरी तरह से भुनाने का भी प्रयास करेंगे। दिल्ली के मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल को आज सुप्रीम कोर्ट से बड़ी राहत मिली है। दो जून को उन्हें सरेंडर करना होगा। लोकसभा चुनाव के बीच अरविंद केजरीवाल का जेल से बाहर आना पार्टी के लिए बड़ी राहत की खबर है। इससे पहले संजय सिंह को जब जमानत मिली थी तो उन्होंने आम आदमी पार्टी की ओर से चुनाव प्रचार की कमान संभाली थी। निश्चित तौर पर अरविंद केजरीवाल के बाहर आने के बाद इंडिया गठबंधन एक नए आक्रमक तेवर में भारतीय जनता पार्टी के खिलाफ मुखर होकर जनसभाएं करेगा। फिलहाल इंडिया गठबंधन की ओर से कांग्रेस नेता राहुल गांधी एवं समाजवादी पार्टी नेता अखिलेश यादव संयुक्त जनसभाएं कर रहे है और अरविंद केजरीवाल के बाहर आने के बाद विपक्ष के तेवरों में और अधिक आक्रमकता नजर आएगी। देखा जाए तो वर्तमान लोकसभा चुनावों को पूरी तरह से धर्म और जाति के आधार पर बांटने की कोशिश की गई है जिसके पीछे जनता से जुड़े बुनियादी मुद्दे ठंडा बस्ते में डाल दिए गए है। इन चुनावों अब कुछ ऐसे बयान भी सामने आने लगे हैं जो चुनाव आयोग को भी खटकने लगे है, हालांकि चुनाव आयोग की कार्रवाई पर भी विपक्ष को आपत्ति है। अरविंद केजरीवाल लोकसभा चुनाव 2024 के शेष बचे हुए मतदान चरणों में एक बड़ा असर डालेंगे इसमें कोई संदेह नहीं है। खास तौर से दिल्ली, पंजाब और उत्तर प्रदेश में अभी कुछ सीटों पर चुनाव होने बाकी है। अरविंद केजरीवाल की रिहाई के दौरान आम आदमी पार्टी ने अपने सभी चुनाव कार्यक्रम रद्द किए लेकिन शनिवार से अरविंद केजरीवाल का एक अलग रूप देखने को मिलेगा जिसे लेकर कहीं ना कहीं भारतीय जनता पार्टी भी नजर गड़ाए बैठी है। सुप्रीम कोर्ट ने अरविंद केजरीवाल पर कुछ बंदिशें जरूर लगाई है लेकिन उनमें चुनाव से संबंधित कोई बात शामिल नहीं है, लिहाजा चुनाव प्रचार के दौरान वह किस प्रकार से खुद को पेश करेंगे अब पूरे देश की नजर इस और रहेगी।

क्षमता विकसित करने के पर्याप्त अवसर मिलें

भारत डोगरा

भारत उन देशों में है जहां जनसंख्या के आयु वर्गीकरण के आधार पर युवा शक्ति का प्रगति में अधिक योगदान अपेक्षित है।

इन संभावनाओं को भरपूर प्राप्त करने के लिए यह जरूरी है कि युवाओं को इस प्रगति के अनुकूल अपनी क्षमता विकसित करने के पर्याप्त अवसर मिलें। इसके लिए शिक्षा और कौशल विकास के बेहतर अवसर तो जरूरी हैं ही, पर इसके साथ युवा सोच को ऐसी दिशा देना भी जरूरी है जो सामाजिक आर्थिक प्रगति के अनुकूल हो।

यह इस समय और भी जरूरी हो जाता है जब युवाओं के सामने तरह-तरह के अनिश्चय की स्थितियां उपस्थित हैं। एक ओर बेरोजगारी की समस्या है और योग्यता तथा अपेक्षा के अनुकूल रोजगार न मिल पाने की समस्या है। दूसरी ओर, कुछ अन्य स्तर पर भी अनिश्चय और भटकाव है। आखिर, ऐसी क्या बात है कि पंजाब-हरियाणा जैसे अपेक्षाकृत समृद्ध क्षेत्रों में भी अनेक खाते-पीते परिवारों के युवक भी किसी तरह विदेश जाने से ही अपनी उम्मीदें जोड़ कर बैठ गए हैं। [illegible] मांग के अनेक खर्चों को उठाना मंजूर है, इसके लिए परिवार को कर्जग्रस्त होना मंजूर है, पर विदेश जाना एक जिद बन गई है जबकि आसपास के परिवेश से जुड़कर एक बेहतर जीवन तलाशने का विकल्प स्वीकार्य नहीं है। इस तरह की स्थितियों से लगता है कि एक ओर शिक्षा और रोजगार की स्थिति से जुड़ी हुई समस्याएं हैं तो दूसरी ओर कुछ अन्य तरह का भटकाव और अनिश्चय भी है। इस कारण अनेक तनाव भी बढ़ सकते हैं और नशे जैसी तबाही की ओर झुकाव बढ़ सकता है। इन समस्याओं के बीच समाधान की एक बड़ी राह यह है कि कुछ बुनियादी मूल्यों और प्रतिबद्धताओं को युवाओं में प्रतिष्ठित किया जाए और उनकी सोच को इसके अनुकूल बताया जाए। यह सच है कि अधिकांश युवाओं के लिए रोजगार और आजीविका की सोच प्रमुख है, पर आगे चुनौती यह है कि इसके साथ एक बेहतर समाज बने और युवाओं का इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका में कैसे जोड़ा जा सकता है।

युवाओं को प्रोत्साहित करना चाहिए कि छात्र जीवन से ही वे इस बारे में अधिक सोचें कि उनकी प्रतिभाएं अधिक विकसित किस क्षेत्र में हो सकती हैं और किस तरह आसपास के समाज से जुड़ सकती हैं। इस तरह उनकी रचनात्मकता कहीं बेहतर ढंग से उभर सकेगी और समाज की भलाई से भी जुड़ सकेगी। इस पर अनेक युवा कहेंगे कि इस तरह की नौकरी न मिले (जिसमें अपनी रचनात्मक प्रतिभा और समाज की बेहतरी का मिलन हो) तो क्या करें। केवल नौकरी ही सब कुछ नहीं है, स्वरोजगार की भी अनेक संभावनाएं हैं, मित्रों-साथियों के साथ मिल कर भी कार्य करने की अनेक संभावनाएं हैं। जरूरत इस बात की है कि इस बारे में खूब सोच-विचार करें, जांच पड़ताल करें, अध्ययन करें और मित्रों, साथियों, अनुभवी व्यक्तियों, अभिभावकों से विमर्श करें कि अपनी प्रतिभा, क्षमता और सामाजिक भलाई के मिलन के आधार पर कैसे आगे बढ़ा जाए। यदि डाक्टर बनना है तो निर्धन लोगों की सेवा में अधिक जुड़ा जाए, यदि अध्यापक बनना है तो शिक्षा के साथ अच्छे संस्कार भी दिए जाएं, यदि पंचायत सदस्य बनना है तो पूरे गांव की भलाई से जुड़ा जाए, यदि किसान बनना है तो पर्यावरण की रक्षा वाली खेती की जाए। यह प्रक्रिया अपने आप रचनात्मक है कि इसमें गुजरते हुए ही युवाओं की क्षमता और समझ बहुत बढ़ती है और वे बेहतर इंसान भी बनने लगते हैं। इस सोच और विमर्श से गुजरते हुए ही युवाओं को अपने वर्तमान और भावी जीवन के बारे में कुछ ऐसे संकल्प बना लेने चाहिए जो उन्हें बेहतर जीवन और समाज की राह पर चलने में बहुत मदद करेंगे। पहली बात तो यह है कि सभी तरह के नशे से दूर रहने का संकल्प कर लिया जाए। अपने स्तर पर तो यह कर ही लिया जाए, और हो सके तो नजदीकी मित्रों और साथियों को साथ लेकर भी यह संकल्प कर लिया जाए। शराब ड्रग्स, सिगरेट-बीड़ी, गुटका आदि सभी तरह के नशों को जीवन भर के लिए त्याग देना चाहिए। खान-पान, आचार, व्यवहार सभी में बेहतर स्वास्थ्य का ध्यान भी रखना होगा क्योंकि अच्छे स्वास्थ्य के बिना कोई भी बड़ा संकल्प प्राप्त करने में अनेक कठिनाइयां आती रहती हैं। सुरक्षा का, किसी एक्सीडेंट या दुर्घटना से बचाव का अपने और परिवार के स्तर पर बड़ा ध्यान रखना चाहिए, इसके लिए जरूरी सावधानियां अपनानी चाहिए।

युवाओं को अपने परिवार की भलाई से भरपूर जुड़ना चाहिए। आगे उनका विवाह होता है, तो अपने नये परिवार के प्रति पूरी निष्ठा जीवन भर रखनी चाहिए। युवाओं के लिए यह विशेष तौर पर जरूरी है कि महिलाओं का पूरा सम्मान करें और अपनी पत्नी (या किसी भी अन्य महिला के प्रति) कभी भी हिंसा या अत्याचार न करें। अच्छे पारिवारिक जीवन से एक बुनियाद तैयार होती है तो जीवन-पथ पर सदा सहायक होती है। अपने मित्रों, सहयोगियों के साथ अच्छे संबंध बनाए रखना, विश्वास और आपसी सहयोग के संबंध बनाए रखना भी लगभग इतना ही जरूरी है। तरह-तरह की फिजूलखर्ची से बचना चाहिए, केवल भेड़-चाल में आ कर अनाप-शनाप खर्च नहीं करना चाहिए और अपनी तथा परिवार की वास्तविक जरूरतों को पूरा करने के साथ कुछ बचत करने पर अधिक ध्यान देना चाहिए। ईमानदारी और न्याय के लिए प्रतिबद्धता जीवन में आरंभ से बना लेनी चाहिए और किसी भी अपराध और जुए जैसी बुराइयों के नजदीक भी नहीं जाना चाहिए।

सोशल मीडिया, मोबाइल फोन और कंप्यूटर की आधुनिक दुनिया में यह समझ बना लेना बहुत जरूरी है कि इनका सही उपयोग क्या है और अनुचित उपयोग क्या है। अनुचित उपयोग से यथासंभव दूर रहना चाहिए। अपने भीतर की हिंसक प्रवृत्तियों को, क्रोध और हिंसा को प्रयास कर दूर करना चाहिए तथा अमन-शांति तथा अहिंसा की राह पर जीवन भर चलना चाहिए। धर्म, जाति, लिंग, नस्ल, रंग आदि के आधार पर होने वाले किसी भी भेदभाव से दूर रहना चाहिए और सभी इंसानों की समानता, सभी धर्मों के सम्मान में गहरा विश्वास रखना चाहिए। न्याय के लिए आवाज उठाने के लिए तैयार रहना चाहिए, पर इसके लिए आपसी एकता से अपने को मजबूत भी बना लेना चाहिए।

ये कुछ ऐसे जीवन-मूल्य हैं जिन्हें अपना लिया जाए, या जिन्हें अपनाने का निरंतरता से प्रयास किया जाए, तो एक ऐसे जीवन की बुनियाद तैयार हो जाती है, जिससे अपनी प्रतिभाओं और रचनात्मकता को समाज की भलाई से अधिकतम जोड़ा जा सकेगा। कल्पना कीजिए, यदि बढ़ती संख्या में युवक-युवतियां, छात्र-छात्राएं अपने भावी जीवन के बारे में इस तरह सोचने लगें तो कितना बड़ा बदलाव आ सकता है। युवा ही हमारे समाज की सबसे बड़ी संपत्ति है, देश और समाज का भविष्य उनके ही हाथों में है।

अतः आज के तरह-तरह के भ्रम और भटकाव के बीच उनके जीवन की सही दिशा प्राप्त करना अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है और इस महत्त्वपूर्ण सामाजिक जिम्मेदारी की हमें कभी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

आपराधिक छवि के लोगों को चुनावी मैदान में उतारने से परहेज की जरूरत

मुकेश सिंह

बृजभूषण शरण सिंह पर बेशक अभी आरोप सिद्ध नहीं हुए हैं, मगर जिस तरह महिला पहलवानों ने उनके खिलाफ साक्ष्य प्रस्तुत किए और जांचों से भी उनके खिलाफ तथ्य सामने आए, उससे उन्हें फिलहाल निरपराध नहीं कहा जा सकता।

अब यह उजागर है कि प्रत्याशी के चुनाव में राजनीतिक दलों से साफ-सुथरी छवि का ध्यान रखने की चाहे जितनी अपेक्षा और मांग की जाए, पर उनका मकसद एक ही होता है। वे उसी को उम्मीदवार बनाते हैं, जिसके जीतने की संभावना अधिक होती है, चाहे वह आपराधिक छवि का ही क्यों न हो। माना जा रहा था कि भारतीय जनता पार्टी बृजभूषण शरण सिंह को चुनाव मैदान में नहीं उतारेगी।इसे लेकर उसमें ऊहापोह भी देखी जा रही थी। मगर लंबी जद्दोजहद के बाद आखिरकार उसने उनकी जगह उनके बेटे करण भूषण सिंह को टिकट दे दिया। बृजभूषण शरण सिंह महिला पहलवानों के यौन शोषण के आरोप में अदालत की सुनवाइयों का सामना कर रहे हैं। उनकी वजह से भाजपा को खासी किरकिरी झेलनी पड़ी। यहां तक कि अंतरराष्ट्रीय कुश्ती संघ ने भी बृजभूषण शरण सिंह पर अंगुली उठाई थी, जिसके चलते उन्हें कुश्ती महासंघ के चुनाव से अलग रहना पड़ा। मगर उन्होंने कुश्ती महासंघ पर अपना दबदबा कायम रखने की नीयत से अपने एक करीबी को अध्यक्ष का चुनाव लड़ाया और उसे ही विजय भी मिली। उस पर भी अंगुलियां उठनी शुरू हुईं, तो खेल मंत्रालय को आखिरकार बृजभूषण शरण सिंह के करीबी को अध्यक्ष पद से हटाना पड़ा। यह समझना मुश्किल है कि भाजपा के सामने ऐसी क्या मजबूरी थी, जो उसने बृजभूषण शरण सिंह से अपना पल्ला छुड़ाना उचित नहीं समझा। उनकी जगह उनके बेटे को टिकट दे दिया। इससे बृजभूषण शरण सिंह को लेकर उठ रहे सवाल शांत नहीं हो जाएंगे। इसके पीछे एक वजह तो यह बताई जाती है कि उत्तर प्रदेश में राजपूत समाज लगातार भाजपा पर आरोप लगा रहा था कि वह राजपूत समाज के प्रत्याशियों का टिकट काट रही है।

दूसरा कारण यह हो सकता है कि बृजभूषण का टिकट कटने से उनके बगावत करने और उस सीट से भाजपा के हारने की आशंका हो सकती थी। मगर इस तरह समझौता करके भाजपा अगर अपनी एक सीट बचा भी ले, तो इससे उसके सिद्धांतों पर सवाल तो उठेंगे ही। लंबे समय से मांग की जा रही है कि राजनीतिक दल अपने प्रत्याशियों का चयन करते हुए उनकी छवि का ध्यान रखें। निर्वाचन आयोग ने भी कहा था कि राजनीतिक दल आपराधिक छवि के लोगों को चुनावी मैदान में उतारने से परहेज करें। अगर वे किसी ऐसे प्रत्याशी को टिकट देती हैं, तो उन्हें इसका स्पष्टीकरण देना होगा कि आखिर उन्होंने ऐसा क्यों किया, क्या उसकी जगह कोई और प्रत्याशी नहीं मिला। बृजभूषण शरण सिंह की जगह उनके बेटे को टिकट देकर बेशक भाजपा इस जवाबदेही से बच गई है, पर यह तो जाहिर है कि वह चुनाव उनका बेटा नहीं, एक तरह से वे खुद लड़ेंगे।बृजभूषण शरण सिंह पर बेशक अभी आरोप सिद्ध नहीं हुए हैं, मगर जिस तरह महिला पहलवानों ने उनके खिलाफ साक्ष्य प्रस्तुत किए और जांचों से भी उनके खिलाफ तथ्य सामने आए, उससे उन्हें फिलहाल निरपराध नहीं कहा जा सकता। यह भी छिपी बात नहीं है कि उनके खिलाफ आंदोलन पर उतरी महिला खिलाड़ियों को किस तरह दमन के जरिए आंदोलन से हटाया गया।इन सबको लेकर लगातार सरकार के रवैये पर सवाल उठते रहे हैं। इसके बावजूद उनकी जगह उनके बेटे को टिकट देकर भाजपा ने एक तरह से एक नए विवाद को गले लगा लिया है। इसे लेकर विपक्षी दलों और महिला खिलाड़ियों की नाराजगी झेलनी पड़ सकती है।

अर्थव्यवस्था के लिए महत्त्वपूर्ण

डॉ. जयंतीलाल भंडारी

हाल में एशियाई विकास बैंक (एडीबी) ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि भारत के तेजी से बढ़ते सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में ग्रामीण अर्थव्यवस्था की अहम भूमिका है। बढ़ते कृषि उत्पादन और ग्रामीण बाजारों में मांग बढ़ने से निजी खपत में भी तेजी आ रही है।भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) और प्रमुख मौसम एजेंसी स्काईमेट ने कहा है कि अनुकूल मानसूनी मौसम के कारण इस वर्ष 2024 में भारत में अच्छी वर्षा के स्पष्ट संकेत खेती और भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। इसी प्रकार हाल में भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने कहा है कि वर्ष 2024 में दक्षिण-पश्चिम मानसून के सामान्य रहने की उम्मीद है, जिससे कृषि गतिविधियों में और तेजी आएगी। ग्रामीण बाजारों में भी मांग बढ़ने से अर्थव्यवस्था को तेज गति मिलेगी।

गौरतलब है कि विभिन्न रिपोटरे में कहा जा रहा है कि भारत के ग्रामीण अधिक खर्च कर रहे हैं। गांवों में न केवल कृषि संबंधी संसाधनों की अधिक बिक्री हो रही है, वरन फ्रिज, दोपहिया वाहन और टीवी की खरीदारी भी उच्च स्तर पर है। यह सब ग्रामीण भारत में भविष्य के प्रति उत्साह और वर्तमान के बेहतर परिणामों का प्रतीक है। यह भी महत्त्वपूर्ण है कि भारत में पिछले एक दशक में शहरी परिवारों के मुकाबले ग्रामीण परिवारों का खर्च तेजी से बढ़ा है। ग्रामीण भारत के विकास के लिए सरकारी योजनाओं के तहत किए गए भारी व्यय, ग्रामीणों के रोजगार की मनरेगा योजना तथा स्वरोजगार की ग्रामीण योजनाओं से ग्रामीण परिवारों की आमदनी में तेज इजाफे के साथ उनकी क्रय शक्ति और मांग में भारी इजाफा हुआ है। इससे ग्रामीण भारत की आर्थिक ताकत में वृद्धि हुई है।यद्यपि अभी आम चुनाव के बाद जून, 2024 में गठित होने वाली नई सरकार के मूर्त रूप लेने में कोई दो माह बकाया हैं, लेकिन उच्च प्रशासनिक स्तर पर वर्ष 2047 तक भारत को विकसित देश बनाने के मकसद से जिन क्षेत्रों के लिए आगामी पांच सालों के लिए प्रभावी रणनीति बनाई जाना शुरू की गई है, उनमें कृषि भी प्रमुख है। यह कोई छोटी बात नहीं है कि इस समय पूरी दुनिया में भारत को खाद्यान्न का नया वैश्विक कटोरा माना जा रहा है। भारत दुनिया का तीसरा बड़ा खाद्यान्न उत्पादक है।

दुनिया में सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक देश बना हुआ है। गेहूं तथा फलों के उत्पादन के मामले में भारत दुनिया में दूसरे स्थान पर तथा सब्जी उत्पादन में तीसरे स्थान पर है। विश्व स्तर पर भारत केला, आम, अमरूद, पपीता, अदरक, भिंडी, चावल, चाय, गन्ना, काजू, नारियल, इलायची और काली मिर्च आदि के प्रमुख उत्पादक के रूप में जाना जाता है। खाद्य प्रसंस्करण के मामले में भी भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है। जहां कोविड-19 की आपदा से लेकर अब तक भारत वैश्विक स्तर पर दुनिया के जरूरतमंद देशों की खाद्य संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने में अहम भूमिका निभाते हुए दिखाई दे रहा है, वहीं भारत ने दुनिया भर में कृषि उत्पादों के निर्यात बढ़ाने का अवसर भी मुट्ठियों में ले लिया है। भारत से कृषि निर्यात लगातार बढ़ते जा रहे हैं। अनाज, गैर-बासमती चावल, बाजरा, मक्का और अन्य मोटे अनाज के अलावा फलों एवं सब्जियों के भारत से निर्यात में भी भारी वृद्धि दर्ज की गई है।

कई छोटे देशों के बाजार भी भारत की मुट्ठियों में आए हैं। इस समय दुनिया में कृषि निर्यात में भारत का स्थान सातवां है। भारत से करीब 50 हजार डॉलर से अधिक मूल्य का कृषि निर्यात होता है। खाद्य प्रसंस्करण में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है, जहां भारत से निर्यात में वृद्धि नहीं हुई हो। अब भारत की खाद्य प्रसंस्करण क्षमता 12 लाख टन से बढ़कर दो सौ लाख टन हो गई है।

भारत में चल रही नशे की सुनामी

ममता भार्गव

हाल ही में एक पाकिस्तानी नौका से छह सौ करोड़ मूल्य की 86 किलोग्राम हेरोइन की बरामदगी भारत में नशे के बढ़ते कारोबार में विदेशी साजिश का खुलासा करती है। वैसे यह अकेली घटना नहीं है, हाल ही के वर्षों में अरबों रुपये के नशीले पदार्थों की बरामदगी हुई है। दरअसल, कई देशों के सत्ता प्रतिष्ठानों की मिलीभगत से नार्को-आतंकवाद के एक बड़े पैटर्न को अंजाम दिया जा रहा है। निश्चित तौर पर यह साजिश हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये एक गंभीर चुनौती है। पुराने अनुभव बताते हैं कि जम्मू-कश्मीर व पंजाब में नशे के कारोबार से अर्जित धन को आतंकवाद के पोषण में लगाया गया।

आतंकवादियों को हथियार व पैसा उपलब्ध कराया गया। पिछली मई में भी नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो यानी एनसीबी और नौसेना के साझे मिशन के जरिये केरल तट पर ढाई हजार किलोग्राम नशीला पदार्थ बरामद किया गया। जिसकी अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कीमत पंद्रह हजार करोड़ रुपये बतायी गई थी। यह देश में बरामद अब तक की सबसे बड़ी नशे की खेप थी। गत माह गुजरात के तट पर साठ पैकेट ड्रग्स ले जा रही एक नौका को जब जब्त किया गया तो छह पाकिस्तानी चालक दल के सदस्यों को गिरफ्तार किया गया। इसी तरह फरवरी में पोरबंदर तट पर पांच विदेशी नागरिकों को चरस व 3300 किलोग्राम नशीले पदार्थों के साथ पकड़ा गया था। दरअसल, इस नशे के कारोबार की शुरुआत अक्सर अफगानिस्तान से होती है, जहां अफीम व हेरोइन का बड़े पैमाने पर उत्पादन होता है। नशे का यह कारोबार अब अफगान सरकार की आय का बड़ा स्रोत भी है। बहरहाल, हालिया घटनाक्रम समुद्र के जरिये मादक पदार्थों की तस्करी से निपटने के लिये गंभीर उपायों की जरूरत बताता है। जिसके लिये मजबूत कानून, प्रवर्तन एजेंसियों की भागीदारी, कुशल खुफिया-साझाकरण तंत्र, नौसेना व तटरक्षक बलों में तालमेल तथा आतंकरोधी दस्ते के जरिये निगरानी तंत्र को मजबूत बनाने की जरूरत है।

निखिल सिद्धार्थ की पैन-इंडिया फिल्म स्वयंभू का नया पोस्टर हुआ रिलीज

टीम स्वयंभू ने निखिल सिद्धार्थ अभिनीत फिल्म का नया पोस्टर जारी कर दिया है. फिल्म में साम्युखता मेनन और नाभा नातेश भी प्रमुख भूमिकाओं में हैं. यह फिल्म टैगोर मधु की प्रस्तुति है, जिसका निर्देशन भारत कृष्णमचारी ने किया है. रवि बसरूर ने फिल्म का संगीत दिया है, और भुवन और श्रीकर ने इसे प्रोड्यूस किया है. फिल्म तेलुगु, हिंदी, तमिल, कन्नड़ और मलयालम भाषाओं में रिलीज होगी. हालांकि फ़िल्म कब रिलीज होगी इसके बारे में अभी कोई जानकारी शेयर नहीं की गई है.

पोस्टर में निखिल सिद्धार्थ को एक योद्धा के रूप में दिखाया गया है, जो रणभूमि में खड़े हैं. उनके सामने हजारों की जनसंख्या नजर आ रही है. स्वयंभू एक एक्शन ड्रामा फिल्म है, जो एक युवक की कहानी है जो अपने जीवन के लिए संघर्ष करता है. फिल्म में निखिल सिद्धार्थ एक ऐसे व्यक्ति की भूमिका निभा रहे हैं, जो अपनी पहचान और अपने परिवार के सम्मान के लिए लड़ता है.ताजा अपडेट के मुताबिक मौजूदा समय में फिल्म की टीम एक प्रमुख एक्शन सीक्वेंस का फिल्मांकन कर रही है, जिसमें प्रमुख कलाकार शामिल हैं। इन दृश्यों में निखिल कुछ हैरतअंगेज स्टंट करते भी नजर आएंगे, जिसे वियतनामी लड़ाकों समेत 700 कलाकारों के साथ 12 दिनों तक शूट किया जाएगा।

रिपोर्ट्स के मुताबिक वॉर सीक्वेंस को दो बड़े सेट पर शूट किया जाएगा। जानकारी के मुताबिक इस सीक्वेंस की शूटिंग में निर्माता पानी की तरह पैसा बहा रहे हैं। बताया जा रहा है कि इसे शूट करने में मेकर्स के आठ करोड़ रुपये खर्च होंगे। इन एक्शन दृश्यों में आने वाली लागत की वजह से यह फिल्म चर्चा के केंद्र में आ गई है।

इस पीरियड एक्शन-एडवेंचर ड्रामा में संयुक्ता और नाभा नटेश महत्वपूर्ण भूमिकाओं में नजर आएंगे। फिल्म का निर्माण भुवन और श्रीकर कर रहे हैं। वहीं, इसे टैगोर मधु द्वारा प्रस्तुत किया जाएगा।

जय शाह ने ऑस्ट्रेलिया के झूठ का किया पर्दाफाश, खारिज किया बड़ा दावा

नई दिल्ली। आईपीएल जब शुरू हुआ था उसके कुछ साल बाद ही चैंपियंस लीग टी20 शुरू हुई थी, लेकिन कुछ ही सालों में ये लीग बंद कर दी गई। कुछ दिनों पहले ऐसी खबरें आई थीं कि इस लीग को दोबारा शुरू किया जा सकता है और ये दावा ऑस्ट्रेलिया की तरफ से किया गया था. लेकिन बीसीसीआई सचिव जय शाह ने इस दावे को खारिज कर दिया है।क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया से जुड़े बोर्ड क्रिकेट विक्टोरिया के सीईओ निक कमिंस ने कुछ दिनों पहले दावा किया था कि भारत, इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया चैंपियंस लीग टी20 को दोबारा शुरू करने पर विचार कर रहे हैं। इस लीग में हर देश की फ्रेंचाइजी लीगों की विजेता और उपविजेता टीमें हिस्सा लेती थीं।

नहीं हुई ऐसी कोई बात

बीसीसीआई सचिव जय शाह ने हालांकि साफ कहा है कि इस तरह की कोई बात उनसे नहीं हुई है। शाह ने गुरुवार को बीसीसीआई मुख्यालय पर पत्रकारों से बात करते हुए कहा, "क्रिकेट विक्टोरिया सीईओ ने मुझसे इस बारे में बात नहीं की है। इस तरह की कोई चर्चा नहीं हुई है। अगर ऐसी कोई बात होती तो या उसका मैं उसका हिस्सा होता तो मैं आपको इस बारे में बता देता।

जिम्बाब्वे के फील्डर ने की बचकानी हरकत

नई दिल्ली। क्रिकेट के मैदान पर कुछ ऐसे नजारे देखने को मिलते हैं, जिनको देखकर हंसी को कंट्रोल करना काफी मुश्किल होता है। ऐसा ही नजारा बांग्लादेश और जिम्बाब्वे के बीच खेले जा रहे चौथे टी-20 इंटरनेशनल मुकाबले में देखने को मिला। जिम्बाब्वे के फील्डर्स ने बीच मैदान पर ऐसी फील्डिंग की, जिसको देखकर आप भी अपना सिर पकड़ लेंगे।

फील्डिंग देख छूट जाएगी हंसी

दरअसल, सोशल मीडिया पर जिम्बाब्वे के फील्डर्स की बचकानी हरकत का वीडियो खूब ट्रेंड कर रहा है। वीडियो में बल्लेबाज हल्के हाथों से गेंद को खेलता है और रन लेने के लिए दौड़ पड़ता है। बैटर को दौड़ लगाता देख गेंदबाज बॉल पर तेजी से झपटा मारता है और गेंद को स्टंप पर थ्रो करता है। हालांकि, बॉलर का थ्रो विकेट पर नहीं लगता है और गेंद दूर चली जाती है। दोनों बल्लेबाज इतने में एक और रन चुराने के लिए दौड़ पड़ते हैं। ओवर थ्रो पर बल्लेबाज को रन लेता देख फील्डर गेंद को नॉन स्टाइकर एंड पर थ्रो करता है। स्टंप के पास खड़ा फील्डर गेंद को दो-तीन प्रयास में जाकर पकड़ता है और गेंद को स्टंप पर मारने की कोशिश करता है। स्टंप के एकदम नजदीक खड़े होने के बावजूद भी जिम्बाब्वे का फील्डर गिल्लियां बिखेरने में नाकाम रहता है। जिम्बाब्वे की यह फील्डिंग देख सोशल मीडिया पर फैन्स की हंसी नहीं रुक रही है।

द ग्रेट इंडियन कपिल शो में आएगी हीरामंडी की अभिनेत्रियां, प्रोमो वीडियो आया सामने

संजय लीला भंसाली के निर्देशन में बनी वेब सीरीज हीरामंडीः द डायमंड बाजार को दर्शकों का बेशुमार प्यार मिल रहा है।इस सीरीज में सोनाक्षी सिन्हा, अदिति राव हैदरी, मनीषा कोइराला, संजीदा शेख और ऋचा चड्ढा जैसी अभिनेत्रियों मुख्य भूमिकाओं में है।इन दिनों तमाम अभिनेत्रियों सीरीज के प्रचार-प्रसार में व्यस्त हैं। अब हीरामंडी की टोली कपिल शर्मा के नए कॉमेडी शो द ग्रेट इंडियन कपिल शो में नजर आएगी।शो का नया प्रोमो वीडियो सामने आ चुका है।नेटफ्लिक्स इंडिया ने अपने आधिकारिक एक्स हैंडल पर द ग्रेट इंडियन कपिल शो का प्रोमो वीडियो साझा किया है, जिसमें सोनाक्षी सहित सभी अभिनेत्रियां कपिल के साथ खूब मस्ती करती नजर आ रही हैं।उन्होंने लिखा, हीरामंडी की सुंदरियां हमारे साथ हंसने के लिए यहां हैं। क्या आप इस शाही कॉमेडी के लिए तैयार हैं?बता दें, द ग्रेट इंडियन कपिल शो के इस एपिसोड को आप शनिवार (11 मई) को रात 8 बजे नेटफ्लिक्स पर देख सकते हैं।

प्रोमो की शुरूआत में सभी अभिनेत्रियां पानीपुरी के स्टॉल पर खड़ी नजर आ रही हैं। कपिल शर्मा दुकानदार बने हुए है, जिन्हें भैया बुलाते हुए सोनाक्षी सिन्हा सभी को पानीपुरी खिलाने के लिए कहती हैं। इस पर कपिल शर्मा कहते हैं कि पानीपुरी खत्म है जी। सोनाक्षी इसकी वजह पूछती हैं तो कपिल कहते हैं, जो भैया बोलती है, उनके लिए खत्म है। इसके बाद सभी जोर से ठहाका लगाते हैं।

कपिल शर्मा को सोनाक्षी सिन्हा से उनकी शादी के बारे में भी सवाल करते हुए देखा जा सकता है। वह सोनाक्षी से कहते हैं कि आलिया ने शादी कर ली और कियारा ने भी कर ली। उनके इतना कहते ही सोनाक्षी बोल पड़ती है कि जले पर नमक छिडक़ रहे हो।

बॉक्स ऑफिस पर मैदान का हुआ बुरा हाल, बड़े मियां छोटे मियां भी नहीं दिखा सकी कमाल

सिनेमाघरों में इन दिनों बिल्कुल भी रौनक देखने को नहीं मिल रही है। बॉक्स ऑफिस पर सभी फिल्मों का बुरा हाल हुआ पड़ा है। टिकट खिडक़ी पर बीते कई हफ्तों से कोई भी फिल्में दमदार कलेक्शन नहीं कर सकी हैं। कई फिल्मों ने तो बॉक्स ऑफिस पर आते ही अपना बोरिया बिस्तर समेट लिया है। सिनेमाघरों में ज्यादातर फिल्मों को दर्शकों की सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं मिली है। अब बॉक्स ऑफिस पर दो ही फिल्में अजय देवगन की फिल्म मैदान और अक्षय कुमार और टाइगर श्रॉफ की बड़े मियां छोटे मियां लगी हुई है। ये फिल्में भी कुछ खास कमला नहीं दिखा पा रही है।

धांसू जीत के बाद भी खुश क्यों नहीं है डु प्लेसी

नई दिल्ली। आईपीएल में हर टीम चाहती है कि वह पहले प्लेऑफ की बाधा को पार करे और फिर ट्रॉफी जीतने की कसर पूरी करे। हर टीम का यही लक्ष्य होता है। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू के कप्तान फाफ डु प्लेसी भी इसी लक्ष्य को लेकर उतरे थे लेकिन उनकी टीम की शुरुआत खराब रही. टीम अब हालांकि ट्रैक पर लौट रही है और प्लेऑफ की उम्मीदों उसकी जिंदा हैं, लेकिन डु प्लेसी फिर भी टीम की एक आदत से परेशान है। वो आदत है बार-बार एक तरह की गलतियां करने की। आरसीबी की आईपीएल-2024 की शुरुआत अच्छी नहीं रही थी। ये टीम दो सप्ताह पहले प्वाइंट्स टेबल में सबसे नीचे थी। लेकिन लगातार चार मैच जीतकर इस टीम ने अपनी प्लेऑफ की उम्मीदों को जिंदा रखा है। आरसीबी ने गुरुवार को पंजाब किंग्स को 60 रनों से मात दी। इस बेहतरीन जीत के बाद भी डु प्लेसी खुश नजर नहीं आ रहे हैं।

इस बात पर है ध्यान

आरसीबी और पंजाब के बीच का मैच काफी अहम था। ये दोनों ही टीमों के लिए करो या मरो वाली स्थिति थी। इस मैच को गंवाने वाली टीम प्लेऑफ की रेस से बाहर हो जाती। इस मैच में आरसीबी ने जीत हासिल की। मैच के बाद डु प्लेसी ने कहा, "आपको टीम के साथ कुछ फॉर्म की जरूरत होती है। इसके अलावा कुछ किस्मत की भी जरूरत होती है। हमारी टीम में कुछ खिलाड़ी थे जिनको शुरुआत में विकेट और रनों की जरूरत थी। उन्होंने कहा, "बल्लेबाजों ने रनों से और गेंदबाजों ने विकेट लेकर अपना योगदान दिया है. हमारे लिए जरूरी है कि हम अपने आप पर फोकस करें। हम उस स्टाइल के साथ ही बने रहना चाहते हैं और अगर हम ऐसा करने में सफल रहे थो फिर हम एक अच्छी टीम कहलाएंगे।"

एक नजर

भीड़ मैनेजमेंट को लेकर खुद मैदान में उतरे डीएम और एसपी

जयन्त प्रतिनिधि।

रूद्रप्रयाग : श्री केदारनाथ धाम के कपाट खुलने के अवसर पर देश-विदेश से हजारों श्रद्धालु बाबा के दर्शनों को पहुंचे हैं। मुख्य द्वार एवं पूर्व द्वार पर श्रद्धालुओं की भारी भीड़ को देखते हुए जिलाधिकारी सौरभ गहरवार ,पुलिस अधीक्षक विशाखा अशोक भदाणे के साथ खुद पूर्व द्वार पर मैनेजमेंट को उतरे।

बता दें कि वीआईपी श्रद्धालुओं के चलते मुख्य लाइन में दर्शनों के लिए खड़े भक्तों को अनावश्यक इंतजार न करना पड़े इसके लिए जिलाधिकारी विशेष प्रयास कर रहे हैं। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने भी दो दिन पूर्व यात्रा की समीक्षा के दौरान वीआईपी दर्शनों के चलते श्रद्धालुओं को कोई परेशानी न हो इसका विशेष ध्यान रखने के निर्देश दिए थे। इसके अलावा शासन स्तर से सभी प्रदेशों में पत्र भेजकर चारधाम यात्रा खुलने के 15 दिनों तक वीआईपी दर्शन के लिए न आने की भी अपील की थी।

13 मई से शुरू होगा दस दिवसीय प्रशिक्षण

जयन्त प्रतिनिधि।

रूद्रप्रयाग : ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान आरसेटी द्वारा विकासखंड जखोली की ग्राम पंचायत बजीरा में 10 दिवसीय पापड़ पिकल मसाला पावडर मेकिंग का प्रशिक्षण दिया जाएगा। उक्त प्रशिक्षण में जनपद स्तरीय अधिकारियों द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले अभ्यर्थियों का मार्गदर्शन किया जाएगा।

उक्त आशय की जानकारी देते हुए ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक केएस रावत ने बताया कि विकासखंड जखोली के बजीरा गांव में एनआरएलएम स्वयं सहायता समूह की सदस्यों एवं स्थानीय ग्रामीणों हेतु 10 दिवसीय पापड़ पिकल मसाला पावडर मेकिंग का प्रशिक्षण दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि प्रशिक्षण 13 मई से 22 मई तक दिया जाएगा। उन्होंने जनपद स्तरीय अधिकारियों से उक्त आयोजित होने वाले प्रशिक्षण में प्रतिभाग करते हुए प्रशिक्षणार्थियों का मार्गदर्शन करने की अपील की है।

आवारा कुत्तों और बंदरों से निजात दिलाने की उठाई मांग

नई टिहरी : नई टिहरी शहर में आवारा कुत्तों और बंदरों से निजात दिलाने की मांग को लेकर कांग्रेस के शहर अध्यक्ष कुलदीप पंवार, उपाध्यक्ष गब्बर सिंह रावत आदि ने डीएम से मुलाकात की। बताया कि बीते कई समय से शहर में आवारा कुत्तों के काटने की घटनाएं बढ़ी हैं। साथ ही बंदर भी महिलाओं और बच्चों पर हमला कर उन्हें घायल कर रहे हैं। इसके अलावा शहरभर के प्राइवेट स्कूलों द्वारा एडमिशन फीस हर साल लिए जाने पर भी कार्यवाही की मांग की। उन्होंने कहा कि अधिकांश स्कूलों में पीटीए का गठन नहीं है। जिन स्कूलों में पीटीए है भी, वहां नियमित बैठक नहीं कराई जाती है। जिससे अभिभावक अपनी समस्या स्कूल प्रबंधन को नहीं बता पाते हैं। डीएम मयूर दीक्षित ने सभी समस्याओं के जल्द निस्तारण का आश्वासन दिया है। (एजेंसी)

परीक्षा कार्यक्रम में किया संशोधन

नई टिहरी : श्रीदेव सुमन विवि से संबद्ध सभी शासकीय व अशासकी महाविद्यालयों, संस्थानों और निजी संस्थानों के आगामी 27 अप्रैल को जारी परीक्षा कार्यक्रम में कतिपय सुझावों के आधार पर पूर्व निर्धारित परीक्षा कार्यक्रम में आंशिक संशोधन किया गया है। यह जानकारी देते हुए परीक्षा नियंत्रक प्रो. वीपी श्रीवास्तव ने बताया कि समाज शास्त्र द्वितीय व चतुर्थ सेमेस्टर की पूर्व निर्धारित तिथि आगामी 13 मई के स्थान पर 30 मई की गई है। इसी तरह से अंग्रेजी द्वितीय व चतुर्थ सेमेस्टर की पूर्व निर्धारित तिथि 17 मई के स्थान पर 31 मई कर दी गई है। जबकि सैन्य विज्ञान की द्वितीय व चतुर्थ सेमेस्टर पूर्व निर्धारित 20 मई की तिथि को एक जून किया गया है। (एजेंसी)

तीर्थपुरोहितों के घर हुए जमींदोज

नई टिहरी : देवप्रयाग तीर्थ पुरोहित समाज ने बदरीनाथ मास्टर प्लान की खुदाई से उनके आवासों के ध्वस्त होने पर जबरदस्त रोष जताया है। तीर्थपुरोहितों ने शासन से निर्माण कंपनी के खिलाफ तत्काल कार्रवाई की मांग की है। बदरीनाथ धाम के कपाट खुलने के साथ ही तीर्थ पुरोहितों की मुश्किलें भी बढ़ गई हैं। बदरीनाथ में मास्टर प्लान के तहत नारायणपुरी में चल रहे रीवर फ्रंट के काम से यहां कुबेर गली स्थित कई घर ध्वस्त हो गए हैं। वहीं अन्य कई घर गिरने की कगार पर पहुंच गए हैं। (एजेंसी)

वनों की सुरक्षा की जिम्मेदारी वन विभाग और आम जनमानस की

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : उत्तराखण्ड के जंगलों में लगातार हो रही वनाग्नि की घटनाओं को देखते हुए सिविल एवं सोयम वन प्रभाग के नौगांवखाल रेंज द्वारा चलाए जा रहे जागरुकता अभियान के तहत पब्लिक इण्टर कॉलेज सुरखेत में आयोजित वनाग्नि सुरक्षा गोष्ठी में वनों को आग से होने वाली क्षति और जैव विविधता पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों की जानकारी दी गई।

सिविल एवं सोयम वन प्रभाग नौगांवखाल रेंज के वन क्षेत्राधिकारी दीपक रावत के मार्गदर्शन में आयोजित वनाग्नि सुरक्षा गोष्ठी में वन आरक्षी महावीर सिंह गुसाई, किरन कुमारी ने छात्र-छात्राओं को जानकारी देते हुए बताया कि वनों की सुरक्षा का दायित्व केवल वन विभाग का ही नहीं है बल्कि

आम जनमानस का भी है। पर्यावरण संरक्षण और जैव विविधता को बचाए रखने के लिए सबको आगे आकर पहल करनी होगी। वनाग्नि से जहां लाखों-करोड़ों रुपये मूल्य की वन सम्पदा जलकर राख हो जाती है वहीं वन्य जीव जन्तु जलकर मर जाते हैं। धरती की सतह से भूमिगत जल स्तर नीचे चले जाने के कारण जल स्रोत सूख जाते हैं। विद्यालय के प्रधानाचार्य पुष्कर सिंह नेगी ने कहा कि वन और वन्य जीवों को अपनी धरोहर मानकर तथा प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनकर ही हम धरती को बचा सकते हैं। इस अवसर पर वन विभाग के कर्मचारियों ने छात्र-छात्राओं को जंगलों में लगने वाली आग को बुझाने का प्रशिक्षण दिया। गोष्ठी में विद्यालय के शिक्षक संजय कुमार, नीरज रमोला, प्रकाश चन्द्र कैंथोला, प्रमोद रावत, नरेन्द्र राणा, एनएसएस के स्वयं सेवी एवं अन्य छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

केंद्रीय विद्यालय न खुलने पर भड़का नरेंद्र भाई विचार मंच

कोटद्वार : नरेंद्र भाई विचार मंच के प्रतिनिधियों ने कोटद्वार क्षेत्र में अब तक केंद्रीय विद्यालय न खुलने पर आक्रोश जताया। कहा कि पिछले कई वर्षों से मंच कोटद्वार में केंद्रीय विद्यालय खोलने की मांग उठा रहे है, लेकिन अभी तक इस संबंध में कोई कार्यवाही नहीं हो पाई है। जबकि कोटद्वार नगर निगम क्षेत्र में सेवारत सैनिक एवं पूर्व सैनिकों के परिवार काफी संख्या में निवास करते है। शुक्रवार को मंच कार्यालय में आयोजित बैठक में वक्ताओं ने कहा कि मंच की ओर से पूर्व में केंद्रीय विद्यालय खोलने के संबध में स्थानीय विधायक व मुख्यमंत्री को ज्ञापन प्रेषित किए थे, लेकिन अभी तक कोई कार्रवाई नहीं हो पाई है। जिस कारण कोटद्वार में निवासरत सेवारत सैनिक, पूर्व सैनिक और आम अभिभावक यहां के निजी स्कूलों में अपने पाल्यों को महंगी शिक्षा दिलाने पर मजबूर हैं। बैठक में तय किया गया कि चुनाव परिणाम के बाद इस संबध में जन सहयोग से आंदोलन किया जायेगा। बैठक में सीपी डोबरियाल, गोपाल कृष्ण बड़थ्वाल, अनूप बिष्ट, बलवान सिंह, सुरेश रावत, विनोद ध्यानी, संजय असवाल, वीर सिंह बिष्ट और महानंद रावत आदि मौजूद रहे।

पूर्व प्रधान ने थलनदी पर पुल बनाने की उठाई मांग

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : विकासखंड दुगड्डा के अंतर्गत ग्राम मुणगांव निवासी पूर्व प्रधान रमेश चंद्र ने थलनदी पर पुल बनाने की मांग की है। उन्होंने कहा कि पिछले साल आई आपदा में ग्राम नालीकाटल को भृगुखाल से जोड़ने वाला पुल बह गया था, लेकिन अभी तक पुल निर्माण को लेकर कोई ठोस कार्यवाही नहीं हो पाई है। जबकि ग्रामीण कई बार पुल निर्माण की मांग उठा चुके है। कहा कि बरसात शुरू होने वाली है, यदि जल्द पुल का निर्माण नहीं कराया गया तो बच्चों का स्कूल जाना भी बंद हो जाएगा।

शुक्रवार को जिलाधिकारी को प्रेषित ज्ञापन में पूर्व प्रधान ने कहा है कि पिछले साल आई आपदा में बादल फटने के बाद थलनदी में बाढ़ आने से ग्राम नालीकाटल में स्थानीय निवासियों को भृगुखाल को जोड़ने वाला पुल, खेत, नहर आदि बह गये थे। बताया कि मुणगांव से नालीकाटल के रास्ते लगभग बीस बच्चे नदी पार कर राजकीय इंटर कॉलेज भृगुखाल पढ़ने जाते हैं। अब दो महीने बाद फिर वर्षाकाल आने वाला है, ऐसे में पुल न होने से ये छात्र विद्यालय नहीं जा पायेंगे। कहा कि इस संबध में उनकी ओर से आपदा प्रबंधन पौड़ी व खंड विकास अधिकारी दुगड्डा को कई बार अवगत कराने के बाद भी स्थिति जस की तस बनी हुई है। ज्ञापन में उन्होंने जिलाधिकारी से इस संबध में संबधित विभागीय अधिकारियों को निर्देशित करने की मांग की है।

गढ़वाल विवि की सम सेमेस्टर परीक्षा 22 मई से

श्रीनगर गढ़वाल : हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विवि ने शुक्रवार को सम सेमेस्टर की मुख्य और बैक परीक्षाओं का कार्यक्रम घोषित कर दिया है। गढ़वाल विवि में परीक्षाएं 22 मई से 15 जून तक चलेगी। गढ़वाल विवि के परीक्षा नियंत्रक प्रो. अनील कुमार नौटियाल ने बताया कि विवि की व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की परीक्षाएं 22 मई 15 जून तक चलेंगी। बताया कि नई शिक्षा नीति के तहत बीए ऑनर्स जर्नलिज्म मासकॉम द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षा 22 से 27 मई तक चलेंगी।

राजमार्ग पर लावारिस पशुओं का जमावड़ा, राहगीर परेशान

श्रीनगर गढ़वाल : नगर निगम क्षेत्र के अंतर्गत बदरीनाथ राजमार्ग पर लावारिस पशुओं का जमावड़ा आते-जाते राहगीरों के लिये सिरदर्द बना हुआ है। बेजुबानों के झुंड एनएच पर चल रहे वाहनों और लोगों के लिए दुर्घटना का कारण भी बन रहे हैं।

आलम यह है कि स्वीत से लेकर कीर्तिनगर के बीच खुले में घूम रहे लावारिस बेजुबानों की संख्या सैकड़ों में है जिस कारण आये दिन राजमार्ग पर जाम की स्थिति व दुर्घटना का खतरा बना रहता है। नगर के मुख्य मार्गों गोला बाजार, सब्जी मंडी, काला रोड, वीर चंद्र सिंह गढ़वाली, गणेश बाजार सहित अन्य इलाकों में घूम रहे जानवरों से लोगों का बाजारों में चलना मुश्किल हो गया है। सबसे ज्यादा दिक्कतें स्कूली बच्चों व बुजुर्गों को हो रही हैं। स्थानीय निवासी नरेंद्र सिंह रावत, राजेश बडोनी, महेश पुरी, इरशाद व तनुज का कहना है कि श्रीनगर में लावारिस जानवरों के जगह-जगह घूमने से आये दिन जाम की स्थिति पैदा हो रही है। एनएच व नगर के बीच लावारिस पशुओं के झुंड में घूमने, आपस में लड़ने से छोटे बच्चों, बुजुर्गों व दुपहिया वाहनों को बाजार में चलने में दिक्कतें हो रही हैं।

पेयजल के लिए भटक रहे बीरोंखाल के घोड़ियाना के ग्रामीण

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : विकासखंड बीरोंखाल के घोड़ियाना गांव में तीन दिनों से पानी नहीं आने से ग्रामीण पेयजल के लिए इधर-उधर भटक रहे हैं। ग्रामीणों का आरोप हैं कि जल संस्थान पौड़ी के अधिकारियों को शिकायत करने के बावजूद भी पानी उपलब्ध नही हो रहा हैं। जिससे ग्रामीणों में आक्रोश व्याप्त है। घोड़ियाना निवासी गणेश सिंह, दलीप सिंह, दर्शन सिंह रावत ने बताया कि डुमैला मल्ला-बीरोंखाल पंपिंग पेयजल योजना से पानी की आपूर्ति होती थी, लेकिन तीन दिनों से पानी नही आने से ग्रामीण दो किलोमीटर दूर काशीपुर-बुआखाल हाईवे पर लगे हैंड पंप से पानी ढोने को मजबूर हैं।

ग्रामीणों ने बताया कि उनके गांव का प्राकृतिक स्रोत बारिश नही होने से सूख गया हैं जिससे ग्रामीणों के सामने पानी की किल्लत हो गई हैं। ग्रामीणों ने जल संस्थान से शीघ्र पानी उपलब्ध कराने की मांग की है। उधर, जल संस्थान पौड़ी के अवर सहायक अभियंता सौरभ पांडे ने बताया कि पंप चलाने वाले ट्रांसफार्मर का लगातार प्यूज उड़ रहा है। ऊर्जा निगम स्यूंसी को जानकारी दे दी हैं।

आम आदमी पार्टी जिलाध्यक्ष ने ली कांग्रेस की सदस्यता

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : आम आदमी पार्टी के जिलाध्यक्ष रहे गौरव रावत कांग्रेस का दामन थाम लिया है। शुक्रवार को पूर्व कैबिनेट मंत्री सुरेन्द्र सिंह नेगी के आवास में महानगर कांग्रेस कमेटी द्वारा आयोजित कार्यक्रम में उन्हें विधिवत कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ग्रहण करवाई गई।

इस अवसर पर फूल माला पहनाकर गौरव रावत का स्वागत किया गया। पूर्व कैबिनेट मंत्री सुरेन्द्र सिंह नेगी ने कहा कि गौरव रावत के शामिल होने पर कांग्रेस पार्टी को मजबूती मिलेगी। गौरव रावत ने कहा कि वे पार्टी की विचारधारा से प्रभावित होकर कांग्रेस में शामिल हो रहे हैं। कहा कि वे पार्टी की रीतियों और नीतियों को जन-जन तक पहुंचाने में अपना योगदान देंगे और वर्तमान भाजपा सरकार की कुरीतियों के खिलाफ आवाज

उठाते रहेगें। इस मौके पर महानगर कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष संजय मित्तल, भीम सिंह नेगी, दामोदर रावत, रूपेंद्र सिंह नेगी, अनिल नेगी, हरि सिंह, राकेश आर्य, प्रदीप रावत, प्रवीन रावत, विजय रावत, हिम्मत सिंह नेगी आदि मौजूद रहे।

जंगलों में आग की घटनाएं बढी तो एनडीआरएफ की ली जाएगी मदद

जनपद में तैनात हुए एनडीआरएफ के 50 कार्मिक

जयन्त प्रतिनिधि।

पौड़ी : जिलाधिकारी डॉ. आशीष चौहान ने वन विभाग और एनडीआरएफ के कार्मिकों के साथ जंगलों में लग रही आग को रोकने के लिए बैठक की। उन्होंने कहा कि जिन जगहों पर वनाग्नि की ज्यादा घटनाएं हो रही हैं वहां एनडीआरएफ की तैनाती करने का निर्णय भी लिया गया है।

जिलाधिकारी ने बैठक में कहा कि पिछले कई दिनों से जंगलों में लगी आग बारिश होने से नियंत्रित हुई है। कहा कि जंगलों में आग फिर से देखने को मिलती है तो वन विभाग के अलावा एनडीआरएफ की तैनाती की जाएगी। जिलाधिकारी ने कहा कि जनपद में एनडीआरएफ ऊधम सिंह नगर की तैनाती की गई है।

कहा कि जंगलों में आग की घटनाएं बढ़ती हैं तो उन क्षेत्रों में आग पर काबू पाने के लिए एनडीआरएफ की मदद ली जाएगी। उन्होंने कहा कि बारिश से पूर्व

तीन दिन तक वायुसेना के हेलीकॉप्टर की मदद ली गई। वायुसेना हेलीकॉप्टर द्वारा जंगलों के उच्च स्थानों में लगी आग को बुझाई गई। कहा कि बारिश होने के बाद जनपद के अंतर्गत वनाग्नि घटना की सूचना नहीं है। हालांकि वन विभाग, राजस्व विभाग सहित अन्य द्वारा निरंतर रूप से जंगलों का गश्त भी किया जा रहा है। कहा कि आग की घटना मिलने पर तत्काल उन क्षेत्रों में आग पर काबू पाने के लिए एनडीआरएफ के साथ ही वन विभाग की टीम भेजी जाएगी। इस दौरान आग के प्रकोप को रोकने के लिए एनडीआरएफ के कार्मिकों ने अपने अनुभव को साझा किया और जिला प्रशासन के साथ मिलकर वनाग्नि घटनाओं को रोकने की बात कही।

बैठक में डीएफओ गढ़वाल स्वप्निल अनिरूद्व, अपर जिलाधिकारी ईला गिरी व एनडीआरएफ के कार्मिक उपस्थित थे।

ऋषिकेश में हाईकोर्ट की बेंच खोलने का किया स्वागत

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : बीएड प्रशिक्षित युवा संघ ने ऋषिकेश के आईडीपीएल में उत्तराखण्ड हाईकोर्ट की बेंच खोलने का स्वागत किया है। संघ के पदाधिकारियों ने कहा कि ऋषिकेश में उत्तराखण्ड हाईकोर्ट की बेंच खुलने से गढ़वाल के दूरस्थ क्षेत्रों के वादकारियों को सस्ता एवं शुलभ न्याय मिल सकेगा।

शुक्रवार को जारी एक बयान में संघ प्रवक्ता अरविन्द दुदपुड़ी ने कहा कि उत्तराखण्ड उच्च न्यायालय की मुख्य न्यायाधीश रितु बाहरी व न्यायाधीश राकेश थपलियाल की खण्ड पीठ के इस फैसले से गढ़वाल के दूरस्थ क्षेत्रों के लोगों को निश्चित रूप से लाभ मिलेगा। उन्होंने राज्य सरकार से इस दिशा में कदम बढ़ाते हुए उच्च न्यायालय के निर्णय और जन भावनाओं के अनरूप कार्य करने की अपील की है।

अफसर कूड़ा निस्तारण के लिए गंभीरता से कार्य करें : डीएम

नयार नदी में कूड़ा डालने होगें चिन्हित

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : जिलाधिकारी डॉ. आशीष चौहान ने एनआईसी कक्ष से वर्चुअल माध्यम से नमामि गंगे की बैठक ली। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को श्रीनगर, कोटद्वार व जोंक में गंगा वाटिका बनाने के लिए प्रस्ताव बनाते हुए 15 दिन में रिपोर्ट प्रस्तुत कराने के निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने अधिकारियों को सख्त चेतावनी देते हुए कहा कि कूड़े के निस्तारण के लिए गंभीरता से कार्य करें। कहा कि जिस क्षेत्र में कूड़ा जगह-जगह फैला हुआ है उसे तत्काल वहां से उठाकर उसका निस्तारण करें। शुक्रवार को आयोजित बैठक में जिलाधिकारी ने सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट, ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन सहित अन्य कार्यों की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि कूड़ा निस्तारण प्रोपर तरीके से करें, जिससे कूड़ा नदी-नालों में जाने से बच सके। उन्होंने खंड विकास अधिकारी पाबौ को निर्देश दिये कि नयार नदी में जिन लोगों द्वारा कूड़ा डाला जा रहा है उन्हें चिन्हित करें। डीएम ने बाढ़ प्रभावित मैदानी क्षेत्रों में किये गये अतिक्रमण का सर्वे कर चिन्हिकरण करने के संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिये। उन्होंने निकायों के क्षेत्रातंर्गत सभी सिवरेज ट्रीटमेंट प्लांट का सेफ्टी ऑडिट कराते हुए 15 दिन में रिपोर्ट प्रस्तुत कराने को कहा। उन्होंने नगर निकायों के अधिकारियों को दिये कि कंस्ट्रक्शन व डिमोलेशन के कारण उत्पन्न वेस्ट मेटेरियल की डंपिंग हेतु स्थानों का चयन करते हुए 15 दिन के भीतर रिपोर्ट प्रस्तुत कराना सुनिश्चित करें। इसके अलावा उन्होंने विशेष रूप से जोंक, श्रीनगर व सतपुली के अंतर्गत घाटों में सफाई अभियान चलाने को कहा। उन्होंने कहा कि नीलकंठ में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन किये जाने के लिए कार्ययोजना तैयार करें। बैठक में डीएफओ गढ़वाल स्वप्निल अनिरूद्व व निकायों के अधिकारी वर्चुअल माध्यम से उपस्थित थे।

अधिकारी और कर्मचारी "अतिथि देवो भवः" की परम्परा का रखें विशेष ध्यान : महाराज

सरकार द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पालन करें तीर्थयात्री

जयन्त प्रतिनिधि।

देहरादून : अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर विश्व प्रसिद्ध श्री केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री धाम के कपाट खुलने के साथ ही चारधाम यात्रा का शुक्रवार को विधिवत श्री गणेश हो गया है।

चारधाम यात्रा पर आने वाले तीर्थ यात्री अपना पंजीकरण करवाने के साथ-साथ मौसम की जानकारी और समय-समय पर राज्य सरकार द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए ही यात्रा करें।

श्री केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री धाम के कपाट खुलने पर देशवाशियों को शुभकामनाएं देते हुए प्रदेश के पर्यटन मंत्री सतपाल महाराज ने कहा कि चारधाम यात्रा पर आने वाले तीर्थ यात्रियों की सुविधा, सुरक्षा को देखते हुए प्रदेश सरकार ने अनेक व्यवस्थाएं की हैं। चारधाम यात्रा के दृष्टिगत एक स्टेट लेवल कंट्रोल रूम की स्थापना देहरादून स्थित उत्तराखण्ड पर्यटन विकास परिषद मुख्यालय में की गई है, जो कि पूरे यात्राकाल के दौरान संचालित रहेगा। पर्यटकों और यात्रियों को लम्बी कतारों से निजात दिलाने के लिये और लाईन में अधिक समय तक प्रतिक्षा न करनी पड़े इसके लिए धामों में दर्शन के लिए टोकन, स्लॉट की व्यवस्था सुचारू रूप से की जा रही है। यात्रा पर आने वाले यात्रियों से मेरा अनुरोध है कि वह सरकार द्वारा बनाई गयी व्यवस्थाओं का पालन करते हुए यात्रा में सहयोग करें। मेरा यात्रा व्यवस्था में लगे अधिकारियों एवं कर्मचारियों से भी अनुरोध है कि वह यात्रियों की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए ''अतिथि देवो भवः'' की परम्परा के अनुरूप अपना आचरण करें। पर्यटन मंत्री श्री महाराज ने कहा कि पर्यटन विभाग द्वारा चारधाम यात्रा पर आने वाले यात्रियों एवं वाहनों की सुरक्षा और निगरानी हेतु पर्यटक सुरक्षा प्रबन्धन प्रणाली के तहत ऑन लाइन, ऑफ लाइन पंजीकरण की व्यवस्था की गई है। चारधाम यात्रा के लिये ऋषिकेश एवं हरिद्वार में ऑफ लाइन पंजीकरण के लिये भी काउन्टर्स उपलब्ध कराये गये हैं। इस व्यवस्था को सुचारू बनाये रखने के लिये आवश्यक है कि चारधाम यात्रा पर आने वाले यात्री और पंजीकरण में लगे कर्मचारी एवं अधिकारी एक दूसरे का सहयोग करते हुए कार्य करें। चारधाम यात्रा में लगे पर्यटक सुरक्षा, सहायता मित्र पुरी मुस्तैदी के साथ यात्रियों की सेवा में लगे हैं।

चारधाम यात्रा के दौरान सफाई व्यवस्था का विशेष ध्यान रखा गया है। यात्रा मार्गों पर बड़ी संख्या में स्थाई शौचालयों के साथ-साथ अस्थाई शौचालयों की भी पर्याप्त व्यवस्था है। श्री महाराज ने कहा कि राज्य सरकार चारधाम यात्रा में आने वाले यात्रियों के स्वागत एवं सत्कार का पूरा ध्यान रख रही है। उन्होंने चारधाम यात्रा पर आने वाले श्रद्धालुओं से कहा है कि वह उत्तराखण्ड के अन्य पौराणिक एवं धार्मिक तीर्थ स्थलों का दर्शन करने के साथ-साथ मानसखण्ड के मंदिरों और धार्मिक सर्किटों के दर्शनों का लाभ भी यात्रा के दौरान उठा सकते हैं।

राष्ट्रीय राज मार्गों की विशेष रूप से की जा रही निगरानी

लोक निर्माण मंत्री सतपाल महाराज ने कहा कि चारधाम यात्रा के अन्तर्गत आने वाले राष्ट्रीय राज मार्गों की विशेष रूप से निगरानी रखने के प्रबन्ध किये गये हैं। चारधाम यात्रा मार्ग पर अधिकांशतः मार्ग अवरूद्ध होने वाले स्थानों का चिन्हिकरण करने के साथ-साथ इन स्थानों पर ईपीसी कॉन्ट्रेक्टर एवं विभागीय अधिकारियों की देखरेख के अलावा 36 मशीनें लगाई गई हैं। लोक निर्माण विभाग के अधीन आने वाले वैकल्पिक मार्गों पर भूस्खलन प्रभावित क्षेत्र में 40 मशीनें तैनात की गई हैं। श्री महाराज ने कहा कि परिवहन विभाग, भारत सरकार द्वारा चारधाम यात्रा मार्ग पर गढवाल मण्डल विकास निगम के सहायोग से ईवी चार्जिगं स्टेशन स्थापित किये गये हैं। अभी तक 28 स्थानों पर 60 किलोवाट के ईवी चार्जर पहुंचा दिये गये हैं, जबकि 27 जगहों पर चार्जर हेतु फांउडेशन का कार्य किया जा चुका है। अभी तक 17 स्थानों पर ईवी चार्जर पूर्णतः स्थापित किये जा चुके हैं। यात्रियों की आवासीय सुविधा को ध्यान में रखते हुए गढ़वाल मण्डल विकास निगम द्वारा चारधाम यात्रा मार्ग पर पड़ने वाले लगभग 52 पर्यटक आवास गृहों की मरम्मत एवं सौन्दर्यकरण किय गया है। जीएमवीएन द्वारा अब तक लगभग 74 पैकेज टूअरों के अतिरिक्त 107 पैकेज टूअरों का आरक्षण किया जा चुका है। केदारनाथ वैली में पिक्स आवासीय सुविधा 389 बैड्स एवं लगभग 2500 बैड्स की आवासीय सुविधा हेतु टैन्ट लगाये गये हैं।

समिति ने किया एसआरटी परिसर का निरीक्षण

नई टिहरी : हेमवती नंदन बहुगुण गढ़वाल विश्वविद्यालय में नैक के आगामी 6 से 8 जून को होने वाले भ्रमण के मद्देनजर शुक्रवार को विश्वविद्यालय समिति ने एसआरटी परिसर बादशाहीथौल टिहरी का जायजा लिया। समिति की टीम ने नैक भ्रमण से पूर्व सभी तैयारियां मानकों के अनुरूप रखने के निर्देश दिए। शुक्रवार को गढ़वाल विवि के कुलपति के निर्देश पर प्रो. एपी रहमानी की अध्यक्षता में गठित समिति ने नैक भ्रमण के तहत एसआरटी परिसर का निरीक्षण किया। समिति को परिसर निदेशक प्रो. एए बौड़ाई, पूर्व निदेशक प्रो. आरसी रमोला और निवर्तमान निदेशक प्रो. डीएस कैंतुरा ने परिसर की विभिन्न गतिविधियों का विस्तृत विवरण पेश किया।

इसके बाद टीम के सभी सदस्यों और विभागों के अध्यक्षों द्वारा परिसर का भ्रमण करते हुए एक-एक विभाग का निरीक्षण किया गया। जिसमें प्रशासनिक, खेल एवं पुस्तकालय, वाचनालय, विज्ञान संकाय, कला संकाय, वाणिज्य संकाय, विधि संकाय, छात्रावास पुरुष-महिला हेल्थ सेंटर, खेल के मैदान और अन्य सुविधाओं का गहनता से निरीक्षण किया गया। समिति ने कहा कि अभी बहुत सुधार की आवश्यकता है। नैक भ्रमण से पहले सभी सुविधाओं को दुरुस्त करने का काम किया जाए। (एजेंसी)

चमोली प्रशासन ने धार्मिक यात्राओं को प्लास्टिक मुक्त बनाने हेतु की सार्थक पहल

प्लास्टिक निर्मित सभी पेय पदार्थ की बोतलों पर लगाए जाएंगे क्यूआर कोड

जयन्त प्रतिनिधि।

चमोली : श्री बद्रीनाथ धाम की यात्रा को स्वच्छ एवं प्लास्टिक मुक्त बनाने के लिए चमोली जिला प्रशासन ने रिसाइकल कंपनी के साथ पांच वर्षों का अनुबंध किया है। उप जिला मजिस्ट्रेट चंद्रशेखर वशिष्ठ ने बताया कि अनुबंध के अनुसार पर्यावरण अधिनियम में निहित प्रावधानों के अंतर्गत स्थान नीती वैली, गोविन्दघाट, माणा गांव एवं बद्रीनाथ धाम तक सभी वाणिज्यिक संस्थाओं एवं असंगठित इकाईयों में बिक्री होने वाले समस्त प्लास्टिक निर्मित बोतल, सामग्री आदि पर सौ प्रतिशत रिफंडेबल 10 रुपये मूल्य का यूनिक सीरिएलाइज्ड आइडेंटिफिकेशन कोड लगाया जाना आवश्यक होगा।

क्यूआर कोड रिसाइकल कंपनी द्वारा औली, नरसिंह मंदिर, गोविन्दघाट, माणा गांव एवं बद्रीनाथ धाम में न्यूनतम मूल्य 10 रुपये डिपाजिट पर समस्त थोक विक्रेता, वितरक, दुकान, होटल, होमस्टे एवं रेस्टरां स्वामियों को उपलब्ध कराया जाएगा। उप जिला मजिस्ट्रेट ने बताया कि गोविन्दघाट, नीती वैली, माणा गांव एवं बद्रीनाथ धाम एवं यात्रा मार्ग पर स्थित वाणिज्यिक संस्थाओं एवं असंगठित इकाईयों द्वारा प्लास्टिक बोतल व सामग्री बिना क्यूआर कोड के विक्रय करने पर नियमानुसार कार्यवाही अमल में लाई जाएगी। रिसाइकल कंपनी के डिपॉजिट रिफंड काउंटर गोविन्दघाट, नीती वैली, माणा गांव एवं बद्रीनाथ धाम तक उपलब्ध होगें। यात्रियों द्वारा कंपनी के विभिन्न स्थानों पर स्थापित काउंटर पर क्यूआर कोड वाली खाली बोतल जमा करने पर डिपॉजिट रिफंड लिया जा सकेगा।

उत्तर रेलवे
ई-नीलामी
आज़ादी का अमृत महोत्सव
वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक/कोचिंग, (ए.सी.ओ) उत्तर रेलवे मुरादाबाद मंडल के द्वारा पार्किंग एवं पे एंड यूज़ शौचालय के कार्य को IREPS के माध्यम से विभिन्न स्टेशनो पर ठेके पर देने हेतु ई-बोलियाँ www.ireps.gov.in पर दिनांक 27.05.2024 एवं 30.05.2024 को आमंत्रित की जाती है, जिसकी विस्तृत जानकारी, नियम व शर्तें www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है।
कृते वरिष्ट मंडल वाणिज्य प्रबंधक
उ.रे. मुरादाबाद
1415/24
ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

एक नजर

राष्ट्र की एकता अखंडता बनाए रखने में संत महपुरूषों की निर्णायक भूमिकाः प्रबोधानंद गिरी

हरिद्वार। श्यामपुर कांगड़ी के श्री गंगा आरती धाम में शुक्रवार को हिंदू रक्षा सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष महामंडलेश्वर प्रबोधानंद गिरी ने स्वामी वीरेंद्र स्वरूप और स्वामी प्रज्ञानंद गिरी को दीक्षा प्रदान की। उन्होंने कहा कि राष्ट्र की एकता और अखण्डता बनाए रखने में संत महपुरुषों की निर्णायक भूमिका है।उन्होंने कहा कि सनातन धर्म संस्कृति और दशनाम संन्यास में गुरु शिष्य परंपरा का विशेष महत्व है। गुरु के सानिध्य में प्राप्त ज्ञान से ही शिष्य की उन्नति और कल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है। उन्होंने कहा कि संन्यासी का जीवन समाज को समर्पित होता है। इस दौरान विभिन्न अखाड़ों के संतों ने स्वामी वीरेंद्र स्वरूप और स्वामी प्रज्ञानंद गिरी को तिलक चादर प्रदान कर शुभकामनाएं दी। इस मौके पर महंत श्याम प्रकाश, महंत जमनादास, महंत सूरजदास, महंत नारायण दास पटवारी, महंत विनोद महाराज, साध्वी श्रद्धानाथ, महंत प्रह्लाद दास, स्वामी प्रज्ञानंद, स्वामी सुतीक्ष्ण मुनि, महंत गंगादास, महंत दिनेश दास, महंत गुरनाम सिंह आदि शामिल रहे।

हरिद्वार में अक्षय तृतीया पर चमका सोने का कारोबार

हरिद्वार। हरिद्वार के सर्राफा बाजार में अक्षय तृतीया पर शुक्रवार को सर्राफा बाजार में रौनक रही। शुक्रवार को अच्छा कारोबार हुआ। इसको लेकर सर्राफा कारोबारी उत्साहित नजर आए। अक्षय तृतीया पर सुबह से ही सर्राफा बाजार में ग्राहकों की भीड़ जुटना शुरू हो गई थी। 10 बजे खुलने वाला सर्राफा बाजार अक्षय तृतीया पर नौ बजे ही खुल गया था। अक्षय तृतीया को लेकर सर्राफा कारोबारी पहले से ही तैयारियों में जुटे हुए थे। ज्वालापुर, शिवालिक नगर क्षेत्रों के सर्राफा बाजार में सुबह से लेकर देर शाम तक ग्राहक सोने, चांदी और डायमंड के आभूषण खरीदते रहे। कर ग्राहकों को लुभाया। सर्राफा बाजार से जुड़े कई बड़े कारोबारियों ने आभूषणों के मेकिंग चार्ज पर 20 प्रतिशत की छूट दी।

दुकान बेचने के नाम पर 29 लाख की ठगी

हरिद्वार। दुकान बेचने के नाम पर एक युवा कारोबारी से 29 लाख की रकम ठग ली गई। पीड़ित ने गुरुवार को आरोपी दंपति के खिलाफ कनखल थाने में अमानत में खयानत का मुकदमा दर्ज कराया है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। एसएसपी प्रमेंद्र सिंह डोबाल को दिए प्रार्थना पत्र में घास मंडी पहाड़ी बाजार निवासी सचिन अरोड़ा ने बताया कि उसकी पहचान मोहल्ला म्याना निवासी वंदना गर्ग से थी। वंदना गर्ग ने चौक बाजार में अपनी दुकान बेचने की बात कही थी। इस पर उसने वंदना गर्ग से 54 लाख रुपये में दुकान का सौदा तय कर लिया था। बताया कि उसने वंदना गर्ग को 31 लाख की रकम दे दी थी। शेष रकम बैनामा कराने पर देना तय हुआ था लेकिन बाद में बैनामा कराने को लेकर टाल मटोल की जाने लगी।

धर्मनगरी हरिद्वार में परशुराम जयंती धूमधाम से मनाई

हरिद्वार। धर्मनगरी में शुक्रवार को परशुराम जयंती धूमधाम से मनाई गई। श्रीअखंड परशुराम अखाड़े की ओर से मालवीय घाट ऋषिकुल पर परशुराम जन्मोत्सव तथा अक्षय तृतीया पर 51 ब्राह्मणों ने गायत्री मंत्रों और आठ चिरंजीवी की पूजा की। पंडित अधीर कौशिक, पंडित पवन कृष्ण शास्त्री, जलज कौशिक ने मां गंगा की पूजा-अर्चना, हवन यज्ञ कर श्री परशुराम भगवान का जन्मोत्सव मनाया। महामंडलेश्वर रामेश्वरानंद सरस्वती ने बताया कि जब पृथ्वी पर अधर्म बढ़ता जा रहा था। तब भगवान परशुराम ने अवतरित होकर शास्त्र और शस्त्रों के साथ धर्म की रक्षा करने का काम किया। इसलिए आज भी भगवान परशुराम की जयंती पर शस्त्र और शास्त्र दोनों की पूजा की जाती है।

महिला को सम्मोहित कर नकदी ले उड़े टप्पेबाज

हरिद्वार। सिडकुल में शुक्रवार को एक बैंक के ग्राहक सेवा केंद्र से 40 हजार रुपये निकालकर ले जा रही महिला को सम्मोहित कर नकद और मंगलसूत्र लेकर दो टप्पेबाज फरार हो गए।

कुछ देर बाद होश आने के बाद महिला ने सिडकुल थाने में शिकायत दर्ज कराई है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। मूल रूप से तल्ली नाली अल्मोड़ा निवासी मुन्नी देवी पत्नी प्रकाश सिंह सिद्दी विनायक फेस दो में रहती हैं। वे रावली महदूद ब्रहमपुरी में ग्राहक सेवा केंद्र एसबीआई से 40 हजार रुपये निकालकर घर लौट रही थीं।

धार्मिक विधि विधान के साथ श्रद्धालुओं के लिए खुले गंगोत्री एवं यमुनोत्री मंदिर के कपाट

जयन्त प्रतिनिधि।

उत्तरकाशी : अक्षय तृतीया के पावन पर्व पर गंगोत्री एवं यमुनोत्री मंदिर के कपाट धार्मिक विधिविधान के साथ श्रद्धालुओं के लिए खोल दिए गए है। इस अवसर पर देश-विदेश से आए हजारों श्रद्धालु दिव्य धार्मिक परंपराओं की भव्यता के साथ ही गंगा व यमुना के उद्गम क्षेत्रों की सांस्कृतिक समृद्धि के साक्षी बने। श्रद्धालुओं ने कपाटोद्घाटन के अवसर पर गंगा-यमुना में स्नान-पूजन करने के बाद मंदिर और अखंड ज्योति के दर्शन कर पुण्य अर्जित किया। यात्राकाल के शुभारंभ पर तीर्थ धामों का अभिषेक करने तथा तीर्थयात्रियों के स्वागत के लिए हेलीकॉप्टर से पुष्पवर्षा भी की गई और लोक कल्याण की मंगलकामना करने के साथ ही यात्रा के सुखद और सुरक्षित संपन्न होने की कामना की गई।यमुनोत्री धाम में कपाटोद्घाटन के लिए प्रातः 6 बजकर 29 मिनट पर मां यमुना की उत्सव डोली अपने शीतकालीन प्रवास खरसाली (खुशीमठ) से अपने भाई शनिदेव की अगुवाई में कालिन्दी पर्वत की तलहटी में स्थित यमुनोत्री धाम के लिए रवाना हुई। खरसाली में ग्रामीणों एवं लोक देवाताओं की डोलियों ने यमुना जी की डोली को भावुक कर देने वाले माहौल के बीच विदा किया। डोली यात्रा में जिला कमांडेंट होमगार्ड रूद्रप्रयाग सुनील डंगवाल के नेतृत्व में शामिल 15 महिलाएं 8 पुरूष जवानों का बैगपाईपर बैंड भी आकर्षण का प्रमुख केन्द्र रहा। यमुनोत्री धाम में रोहिणी नक्षत्र की बेला पर वैदिक मंत्रोच्चार व विधि-विधान के साथ तीर्थ पुरोहितों के द्वारा पूर्वाह्न 10 बजकर 29 मिनट पर मंदिर के कपाट श्रद्धालुओं के दर्शनार्थ खोले गए। यमुनोत्री में कपाट खुलने के मौके पर छः हजार से अधिक श्रद्धालुओं के साथ ही एसपी विजिलेंस डॉ. मुरुगेशन, विधायक यमुनोत्री संजय डोभाल, यमुनोत्री मंदिर समिति के अध्यक्ष एवं एसडीएम बड़कोट मुकेश रमोला, सीओ सुरेन्द्र सिंह भण्डारी, मंदिर समिति के सचिव सुरेश उनियाल, पुरोहित महासभा के अध्यक्ष पुरूषोत्तम उनियाल, पवन उनियाल समेत तीर्थ पुराहित और अनेक गणमान्य लोग मौजूद थे।इधर भैरोघाटी से चलकर गंगा जी की डोली हजारों श्रद्धालुओं के जलसे के साथ गंगोत्री धाम पहुंची तो भागीरथी के उद्गम क्षेत्र में आस्था का समुद्र उमड़ पड़ा। हर-हर गंगे के उद्घोष और पूजा-अभिषेक के साथ गंगोत्री धाम में अभिजीत मूहूर्त पर अपराह्न 12.25 बजे कपाटोद्घाटन हुआ। इस अवसर पर सेना की जेकेलाई रेजीमेंट के बैंड की स्वरलहरियों ने कपाटोद्घाटन के महोत्सव की भव्यता को नया आयाम दिया। रेजीमेंट के द्वारा श्रद्धालुओं के लिए लंगर की भी व्यवस्था की गई थी। गंगोत्री मंदिर के कपाटोद्घाटन के अवसर पर अपर पुलिस महानिदेशक ए.पी. अंशुमान, जिलाधिकारी डॉ. मेहरबान सिंह बिष्ट, पुलिस अधीक्षक अर्पण यदुवंशी, मुख्य विकास अधिकारी जय किशन, विधायक गंगोत्री सुरेश चौहान, जिला पंचायत अध्यक्ष दीपक बिजल्वाण, उप जिलाधिकारी बृजेश कुमार तिवारी, पुलिस उपाधीक्षक प्रशांत कुमार, तहसीलदार सुरेश सेमवाल, गंगोत्री मंदिर समिति के अध्यक्ष हरीश सेमवाल, सचिव सुरेश सेमवाल, ब्लॉक प्रमुख भटवाड़ी विनीता रावत सहित तीर्थ पुरोहित और लगभग आठ हजार श्रद्धालुजन उपस्थित रहे।

डीएलएड प्रशिक्षु बोले, एक साथ नहीं चरणबद्ध तरीके से हो शिक्षक भर्ती

देहरादून। राज्य के डायट डीएलएड प्रशिक्षित बेरोजगारों ने शुक्रवार को सरकार से बेसिक शिक्षक भर्ती को एक साथ कराने के बजाए अलग अलग चरण में कराने की मांग की है। डायट डीएलएड प्रशिक्षु संघ ने अध्यक्ष शिवराज रावत और मीडिया प्रभारी विजय ने भर्ती प्रक्रिया को जल्द शुरू कराने का अनुरोध भी किया है। उन्होंने कहा कि डीएलएड का वर्ष 2019-20 के बैच का प्रशिक्षण दिसंबर 2023 में पूरा हो चुका है। तब से प्रशिक्षित शिक्षक भर्ती शुरू होने का इंतजार कर रहे हैं। दूसरी तरफ, प्रतीक्षा सूची के करीब 144 प्रशिक्षुओं का बैच इस साल अक्टूबर 2024 में पूरा होगा। इसके बाद वर्ष 2021-22 के बैच का प्रशिक्षण भी दिसंबर 2024 में पूरा हो जाएगा। चरणबद्ध तरीके से भर्ती होने से राज्य के सभी डीएलएड प्रशिक्षितों को कोर्स पूरा होने के बाद नियुक्तियां मिलती रहेंगी। भाजपा के एनजीओ प्रकोष्ठ के प्रदेश सह संयोजक तेजराम सेमवाल ने भी भाजपा प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र भट्ट को इस बाबत ज्ञापन दिया है। उन्होंने कहा कि कोरोना महामारी की वजह से डीएलएड का सत्र काफी विलंब से शुरू हुआ था। यदि प्रतीक्षा सूची वाले प्रशिक्षुओं को भर्ती में शामिल होने का मौका नहीं मिलता तो यह उनके साथ नाइंसाफी होगी।

चारधाम यात्रा मार्ग जियो के 5 जी नेटवर्क से जुड़ा

देहरादून। चारधाम यात्रा मार्ग जियो का ट्रू 5जी डेटा नेटवर्क से जुड़ गया है। इससे उपभोक्ताओं को सामने कनेक्टिविटी की समस्या से नहीं जूझना पड़ेगा।कंपनी ने दावा किया कि ट्रू 5जी डेटा नेटवर्क हरिद्वार, ऋषिकेश, देवप्रयाग, श्रीनगर, रुद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग, चमोली-गोपेश्वर, जोशीमठ, ऊखीमठ, गुप्तकाशी, उत्तरकाशी, बड़कोट, पुरोला, टिहरी, घनसाली, चिन्यालीसौड़ आदि में भी उपलब्ध होगा। पिछले एक साल में जियो ने ट्रू 5जी नेटवर्क का काफी विस्तार किया है। चारधाम यात्रा मार्ग पर जियो ने अन्य ऑपरेटरों की तुलना में कहीं अधिक 4जी और 5जी टावर लगा लिए हैं। इसके साथ ही सिर्फ जियो के पास 700 मेगाहर्ट्ज बैंड है जो बेहतर 5जी नेटवर्क कवरेज प्रदान करता है।

जिले में निर्माणाधीन पार्किंगों का निर्माण तेजी से करें : डीएम

नई टिहरी : डीएम मयूर दीक्षित ने शुक्रवार को वीसी कक्ष में जनपद के विभिन्न स्थलों पर निर्माणाधीन पार्किंगों को लेकर संबंधित विभागों के अधिकारियों की बैठक ली। इस दौरान उन्होंने निर्देशित किया कि पार्किंगों का निर्माण तेजी से किया जाए। बैठक में डीएम दीक्षित ने जिला विकास प्राधिकरण के तहत प्रस्तावित व निर्माणाधीन पार्किंगों की भौतिक प्रगति की जानकारी लेते हुए कहा कि जिन पार्किंगों की डीपीआर रिवाइज होनी या बनाई जानी है, उन्हें तत्काल बनाकर भेजने तथा जिनमें भूमि हस्तान्तरण या साइट समस्या है उन्हें क्लीयर करने की कार्यवाही विभाग तेजी से करें। एडीएम को लोनिवि, आरईएस, पर्यटन व निर्माण खंड शाखा सहित अन्य विभागों की बनाई जा रही पार्किंगों का विस्तृत विवरण जुटाने को निर्देशित किया। जबकि एसडीएम धनोल्टी को नैनबाग एवं सीआर कैंप धनोल्टी पार्किंग निर्माण के लिए लैंड प्रस्तावित एनओसी प्राधिकरण को देने को कहा गया। इस साथ ही डीएम ने जनपद में बनने वाली सभी पार्किंगों की प्रगित आख्या भी जानी। बैठक में एडीएम केके मिश्रा, एसडीएम धनोल्टी मंजू राजपूत, ईई आरडब्लूडी तेजपाल, प्राधिकरण से दिग्विजय तिवारी, पंकज पाठक आदि मौजूद रहे। (एजेंसी)

छात्रों ने किया सीपेट संस्थान का भ्रमण

देहरादून। उत्तराखंड विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान केन्द्र (यूसर्क) ने शनिवार को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के उपलक्ष्य में छात्रों को डोईवाला स्थित सीपेट संस्थान का भ्रमण करवाया। यूसर्क की निदेशक प्रो अनिता रावत ने कहा कि यूसर्क अभिनव पहल के तहत थीम आधारित राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय दिवसों पर राजकीय विद्यालयों के छात्रों के लिए परिचयात्मक भ्रमण का आयोजन कर रहा है। सीपेट के संयुक्त निदेशक अभिषेक राजवंशी ने कहा कि संस्थान में विभिन्न पाठ्यक्रम संचालित किए जाते हैं। डॉ भवतोष शर्मा ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस के इतिहास पर प्रकाश डाला। डॉ राजेंद्र राणा ने कहा कि यूसर्क द्वारा स्थापित 200 विज्ञान चेतना केन्द्र विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिरुचि और नवाचार की प्रेरणा में वृद्धि कर रहे हैं।

चारधाम यात्रा को लेकर जिला प्रशासन की तैयारियां जोरों पर

जयन्त प्रतिनिधि।

चमोली : चारधाम यात्रा को लेकर जिला प्रशासन की तैयारियां जोरों पर है। जल संस्थान द्वारा चारधाम यात्रा मार्ग पर पेयजल आपूर्ति को सुचारू कर दिया गया है। चारधाम यात्रा मार्ग पर 44 में से 43 टीटीएसपी, 75 में से 63 पीटीएसपी और मार्ग पर स्थित सभी 107 हैंडपंप पर पेयजल आपूर्ति सुचारू की गई है। शुद्ध एवं शीतल पेयजल के लिए यात्रा मार्ग पर 8 वाटर एटीएम और 14 आरओ भी लगाए गए है। साथ ही यात्रा रूट पर स्थित सभी 42 शौचालय में भी पानी की सप्लाई सुचारू कर दी गई है। कर्णप्रयाग के अधिशासी अभियंता मुकेश कुमार एवं गोपेश्वर डिवीजन के अधिशासी अभियंता एसके श्रीवास्तव ने बताया कि विभाग की टीम द्वारा यात्रा मार्ग पर पेयजल गुणवत्ता की भी नियमित जांच की जा रही है।

टिहरी जनपद को 53 नये डॉक्टर मिले

नई टिहरी : जनपद को 53 नये डाक्टर मिले हैं। जिनकी तैनाती दूरस्थ क्षेत्रों में की जा रही है। इन डाक्टरों की तैनात से जनपद में स्वास्थ्य सुविधाओं के सुधार होगा। अब जनपद में सृजित 234 पद के सापेक्ष 233 डॉक्टर तैनात हो गए हैं। प्रदेश सरकार ने स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर करने के लिए नए एमबीबीएस डाक्टरों को जिलों में तैनाती दे दी है। शुक्रवार को टिहरी जिले को भी 53 नए बॉन्ड धारक डॉक्टर मिल गए हैं। सीएमओ डा. मनु जैन ने बताया कि अब जिले में स्वीकृत पदों के सापेक्ष करीब शत प्रतिशत डॉक्टरों की तैनाती हो गई है। बताया कि बॉन्डधारी इन डॉक्टरों को 11 माह के बॉन्ड के बाद फिर से रिन्यू कराने के बाद आगे सेवाएं दी जाती हैं। बताया जिले में 128 स्थाई डॉक्टर जिला अस्पताल, उप जिला अस्पताल, सीएचसी, पीएचसी और उपकेंद्रों पर तैनात हैं। इसके अलावा 50 बॉन्डधारी डॉक्टर पूर्व से ही सेवाएं दे रहे हैं। सीएमओ के अनुसार अब तक सीएचसी बेलेश्वर में 3, देवप्रयाग-हिंडोलाखाल में 6, कीर्तिनगर में 4 सहित पीएचसी पिलखी, घनसाली, सीएचसी चौंड-लंबगांव, प्रतापनगर, मदननेगी, टाईप-ए अस्पताल खवाड़ा, जखंड, हलेथ आदि अस्पतालों में एक-एक डॉक्टर को तैनाती दी गई है। सीएमओ ने बताया कि जिला अस्पताल में भी सभी विशेषज्ञ डॉक्टर सेवाएं दे रहे हैं। जल्द ही जनपद को कुछ नए सीएचओ (कम्युनिटी हेल्थ ऑफिसर) भी मिलने वाले हैं। जिससे स्वास्थ्य सेवाओं में और सुधार आएगा। (एजेंसी)

अक्षय तृतीया पर श्रद्धालुओं ने किया गंगा स्नान

हरिद्वार। अक्षय तृतीय के मौके पर धर्मनगरी के हरकी पैड़ी पर श्रद्धालुओं की भीड़ रही। हरकी पैड़ी के अलावा आसपास गंगा घाटों पर श्रद्धालुओं ने गंगा स्नान किया। गंगा स्नान के साथ ही दान पुण्य किया।श्रद्धालुओं की भीड़ के चलते गंगा घाटों पर बम-बम भोले, हर-हर गंगे के जयकारे लगते रहे। हरकी पैड़ी की प्रबंधकारिणी संस्था श्रीगंगा सभा के अलावा पुलिस की ओर से पर्याप्त इंतजाम किए गए थे। अन्य दिनों की अपेक्षा हरकी पैड़ी खासी भीड़ नजर आई। देर शाम को गंगा आरती में भी काफी संख्या में लोग पहुंचे। अगले दो दिन वीकेंड के कारण हरिद्वार में भीड़ उमड़ने का अनुमान है।

शोरूम से जेवर चोरी की आरोपी पार्लर संचालिका गिरफ्तार

हरिद्वार। करीब पौने दो माह पूर्व कस्बा बहादराबाद क्षेत्र में एक ज्वेलरी शोरूम से सोने और चांदी के जेवरात ले उड़ी दिल्ली की महिला को बहादराबाद पुलिस की टीम ने शुक्रवार को दिल्ली पहुंचकर गिरफ्तार किया। आरोपी महिला के कब्जे से चोरी किए गए जेवरात बरामद किए गए हैं। पुलिस ने महिला को हरिद्वार लाकर कोर्ट में पेश किया जहां से उसे जेल भेज दिया गया है।एसओ नरेश राठौड़ ने जानकारी देते हुए बताया कि 15 मार्च को ओम ज्वेलर्स शोरूम के स्वामी संजीव कुमार वर्मा ने शिकायत दर्ज कराई थी कि उनके शोरूम में ग्राहक बनकर पहुंची एक महिला देखने के बहाने जेवरात लेकर फरार हो गई थी।

छात्रों को किया सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक

देहरादून। जीआरडी एकेडमी निरंजनपुर में शुक्रवार को ग्लोबल रोड सेफ्टी वीक मनाया गया। जिसमें छात्र छात्राओं को सड़क सुरक्षा को लेकर जागरूक किया गया।कार्यक्रम में पहुंचे पद्मश्री व गिनीज बुक वर्ल्ड रिकार्डधारी आर्थोपैडिक सर्जन डा. वीकेएस संजय ने कहा कि हर साल डेढ़ लाख से अधिक लोगों की सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो जाती है और न जाने कितने लोग हाथ या पाव काटने की वजह से विकलांग हो जाते हैं। उन्होंने कहा कि बिना हेलमेट गाड़ी चलाना, फ़ोन पर बात करना, बिना सीटबेल्ट वाहन चलाना, ज़ोर से गाने सुनना और तेज रफ़्तार में वाहन चलाना हादसों का सबसे बड़ा कारण है। उन्होंने छात्रों से यातायात नियमों को पालन करने और बालिग होने पर ही वाहन चलाने की अपील भी की।

केदारनाथ धाम में भीड़ मैनेजमेंट का प्लान पहले ही दिन फेल: माहरा

देहरादून। चार धाम यात्रा में भीड़ मैनेजमेंट प्लान को लेकर कांग्रेस ने सरकार पर हमला बोला है। शुक्रवार को कांग्रेस अध्यक्ष करन माहरा ने मीडिया को जारी बयान में कहा कि केदारनाथ में पहले ही दिन वीआईपी प्रोटोकॉल के नाम पर व्यवस्थाओं की धज्जियां उड़ाई गईं।

25 मई तक खुद सरकार ने चारों धामों में वीआईपी के आने पर रोक लगाई थी। इसके बावजूद खुद सरकार के तमाम वीआईपी पहले ही दर्शन करने को धाम में पहुंच गए। माहरा ने सवाल उठाया कि जब मुख्य सचिव ने श्रद्धालुओं की सुविधा को देखते हुए 25 मई तक श्री केदारनाथ धाम में वीवीआईपी एवं वीआईपी के दर्शन पर पूरी तरह रोक लगाई थी। इसके बाद भी इस नियम की पहले ही दिन अनदेखी की गई। ये भाजपा का दोहरा मापदंड है।

एक नियम और कानून देश प्रदेश की आम जनता के लिए है। दूसरा भाजपा के नेताओं के खुद के लिए। इससे पहले भी भाजपा नेताओं ने शासन के नियमों को कई बार तोड़ा है। गृभ ग्रह में तस्वीरें खिंचवा कर भी पारम्परिक नियमों की धज्जियां भाजपा नेता उड़ा चुके हैं। ऐसा कर सनातन धर्म में आस्था रखने वाले लोगों की आस्था को भी गहरी ठेस पहुंचाई गई है। इससे साफ हो गया है कि भाजपा नेताओं को किसी धर्म में आस्था नहीं है। वे केवल राजनीतिक रोटियां सेंकने और दिखावा करने को ही धर्म का चोला ओड़ते हैं।

कड़ी धूप के बाद भी रजिस्ट्रेशन को लंबी लाइन

हरिद्वार। चारधाम यात्रा के लिए ऑफलाइन रजिस्ट्रेशन को तीसरे दिन भी लंबी लाइन लगी दिखी। 36 डिग्री तापमान के बावजूद यात्री धूप में लाइन में लगे रहे। रजिस्ट्रेशन कराने के लिए तीन से चार घंटे में नंबर आया। लोगों ने अव्यवस्था का आरोप लगाकर सरकार के खिलाफ नारेबाजी भी की। शनिवार से रजिस्ट्रेशन ऋषिकुल मैदान में होंगे। चारधाम यात्रा को लेकर श्रद्धालुओं में भारी उत्साह है। यात्रा के पहले ही दिन रजिस्ट्रेशन कराने वालों की भीड़ उमड़ी। हालांकि आठ मई से पर्यटन कार्यालय में शुरू हो गए थे। पहले दिन सबसे अधिक अव्यवस्था थी। अब सुबह छह बजे रजिस्ट्रेशन के लिए गेट खोला जा रहा है। शुक्रवार को रजिस्ट्रेशन कराने के लिए बड़ी भीड़ नजर आई।

अहिंसा विश्व भारती के संस्थापक एवं जैन मुनि आचार्य लोकेश ने की राज्यपाल से भेंट

देहरादून। राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से नि) से शुक्रवार को राजभवन में अहिंसा विश्व भारती के संस्थापक एवं जैन मुनि आचार्य लोकेश ने भेंट कर अक्षय तृतीया के पावन पर्व एवं परशुराम जयंती पर शुभकामनाएँ दी। इस अवसर पर आचार्य लोकेश ने राज्यपाल को उनके द्वारा सिंगापुर, अमेरिका व ब्रिटेन की सम्पिपन विश्व शांति एवं सद्भावना यात्रा की विस्तृत जानकारी दी और साथ ही अहिंसा विश्व भारती संस्था के आगामी कार्यक्रमों से अवगत कराया। राज्यपाल ने आचार्य लोकेश को अमेरिकन प्रेसिडेंशियल अवार्ड से सम्मानित होकर भारत लौटने पर उन्हें बधाई देते हुए कहा कि आचार्य लोकेश ने मानवतावादी कार्यों से विश्व में भारत देश व संस्कृति का गौरव बढ़ाया है।

इस अवसर पर राज्यपाल ने कहा कि भारत के ऋषि-मुनियों का ज्ञान और तपस्या विश्व में शांति एवं सद्भावना का मार्ग प्रशस्त करता है और वर्तमान में उन्होंने कहा कि भारत की ज्ञान परंपरा में आदिकाल से ही विश्व के कल्याण की कामना की जाती है, और जिस प्रकार भारत अपने पुरातन वैभव को प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है, उसमें हमारे ऋषि-मुनियों का योगदान बहुत अहम है।

राज्यपाल ने कहा कि जैन धर्मगुरुओं ने पूरे विश्व को करुणा और संयम का अभिनव ज्ञान दिया है। उन्होंने कहा कि पूरे विश्व में लोग भगवान महावीर के 2550वें निर्वाण वर्ष को मना रहे हैं और विश्व शांति की कामना कर रहे हैं और आज उनकी दी हुई शिक्षाओं का पालन कर रहे हैं। राज्यपाल ने कहा कि भगवान महावीर जी ने जैन धर्म के मूल मंत्रों के माध्यम से मानवता को एक उच्च स्तर पर प्रेरित किया। उनकी अनमोल शिक्षाओं में अहिंसा, सत्य, असंगता, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य की महत्ता शामिल है। उनके उपदेशों के आलोक में ही जैन समाज के मुनियों ने अपने जीवन को समर्पित किया।

राज्यपाल ने कहा कि जैन मुनियों का जीवन अपरिहार्य रूप से अहिंसा, तपस्या, संयम और सेवा के माध्यम से अलौकिक स्थिति की प्राप्ति का उदाहरण है। उनकी अद्वितीय ध्यान और साधना का परिणाम है कि वे सम्पूर्ण समाज के लिए आदर्श बने हैं। उन्होंने कहा कि हम सभी इस पवित्र परंपरा को समर्पित होकर अपने जीवन में नैतिकता, शांति, और सामर्थ्य का विकास कर सकते हैं।

भेंट के उपरांत राज्यपाल एवं जैन आचार्य लोकेश जी ने अक्षय तृतीया के अवसर पर राजभवन स्थित राजलक्ष्मी गौशाला में गायों को भोजन कराकर गौ सेवा की तथा राजप्रज्ञेश्वर शिव मन्दिर में पूजा कर विश्व कल्याण की कामना की।

जयन्त
संस्थापक
स्व.नरेन्द्र उनियाल
प्रकाशक,मुद्रक और स्वामी
नागेन्द्र उनियाल द्वारा प्रतिभा प्रेस से मुद्रित तथा बद्रीनाथ मार्ग कोटद्वार (गढ़वाल) से प्रकाशित
-सम्पादक
नागेन्द्र उनियाल
आर.एन.आई. 35469/79
फोन/फैक्स 01382-222383
मो. 8445596074, 9412081969
e-mail:
nagendra.uniyal@gmail.com